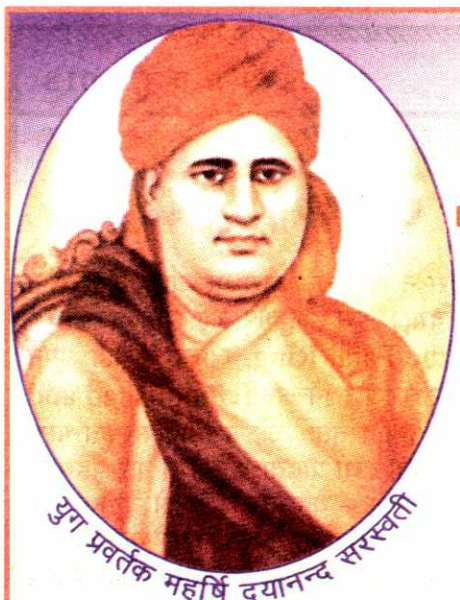
युग प्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती

ओ३म्

वैदिक सार्वदेशिक

वैदिक संस्कृति का उद्घोषक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली का साप्ताहिक मुख-पत्र

वर्ष 8 अंक 21 30 मई से 5 जून, 2013 दयानन्दाब्द 190 सृष्टि सम्वत् 1960853114 सम्वत् 2070 ज्येष्ठ. कृ.-06

शुल्क :- एक प्रति 5 रुपया (भारत में) वार्षिक 250 रुपये तथा आजीवन 2500 रुपये

आस्ट्रिया की राजधानी वियना में गूँजा स्वामी अग्निवेश जी का क्रान्तिकारी स्वर

अवयस्क बच्चों को संकीर्ण, साम्प्रदायिक धर्म से दूर रखने की अपील

विभिन्न धर्माचार्यों और शिक्षा शास्त्रियों की संगोष्ठी में यूरोप तथा अफ्रीका के कई देशों के प्रतिनिधि भारी संख्या में उपस्थित

आस्ट्रिया की राजधानी वियना में 22–23 मई को एक विशेष संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इस संगोष्ठी में यूरोप तथा अफ्रीका के अनेकों देशों के सैकड़ों प्रतिष्ठा प्राप्त धर्माचार्य और शिक्षा शास्त्री उपस्थित थे। इस संगोष्ठी का आयोजन 'किंग अब्दुल्ला इण्टर नेशनल सेन्टर फार इन्टर रिलीजस इण्टर कल्चरल डायलॉग (KAICIID) नामक संस्था ने किया था। संगोष्ठी में भारत के प्रतिनिधि के रूप में प्रसिद्ध सामाजिक कार्यकर्ता तथा सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी अग्निवेश जी उपस्थित थे। ज्ञातव्य हो कि स्वामी जी इस संस्था के बोर्ड ऑफ डाइरेक्टर के सदस्य भी हैं।

इस संगोष्ठी का विषय था ''इमेज ऑफ डी अदर'' अर्थात् एक दूसरे के धर्म के प्रति दुर्भावना तथा उससे उत्पन्न हिंसा को कैसे रोका जाये।

कैसिड (KAICIID) के उद्घाटन पर स्वामी अग्निवेश जी, सऊदी अरब के, आस्ट्रिया के, स्पेन के विदेश मंत्री तथा पोप के प्रतिनिधि कार्डिनल आरिंगे के साथ

इस अवसर पर स्वामी अग्निवेश जी ने धर्म कीं चर्चा करते हुए अपने क्रान्तिकारी वक्तव्य में कहा कि वास्तविक धर्म का कार्य जोड़ना है तोड़ना नहीं। आज मनुष्य धर्म की तरफ पहले से कहीं अधिक अभिमुख हो रहा है। धार्मिक स्थलों तथा धार्मिक स्थानों पर जाने वालों में अतिशय वृद्धि दिखाई पड़ रही है। लेकिन दूसरी ओर मनुष्य का मनुष्य के प्रति व्यवहार तथा सम्बन्धों में गिरावट तथा कटुता निरन्तर बढ़ती जा रही है। यह अत्यन्त विचारणीय है। स्वामी जी ने कहा कि यह गिरावट क्या धर्म की वृद्धि के कारण हो रही है या धर्म में ही कहीं गिरावट आ रही है। स्वामी जी ने कहा कि जब बच्चे कच्चे होते हैं तो उनमें आपस में रंग भेद, लिंग भेद, राष्ट्रभेद तथा धार्मिक अलगाववाद नहीं होता और जब वे बड़े होते हैं तो अलगाववाद के लक्षण आने लगते हैं। स्वामी जी ने सवाल उठाया कि ऐसा क्यों होता है। यह अलगाववाद के जहरीले बीज बच्चों में कौन बोता है। यदि विभिन्न बच्चों को एक साथ रखा जाये तो वे आपस में प्यार करते हैं मिल जुलकर रहते हैं, मिल बाँट कर खाते हैं और यदि लड़ते भी हैं तो कुछ देर बाद ही वह गले मिल जाते हैं उनमें आपस में कोई भेद नहीं होता कोई घृणा नहीं होती किसी तरह का वैर भाव नहीं होता। उनका बच्चा कहलाना इसी बात का परिचायक होता है कि शायद वे भेदभाव के पाप से बचे हुए हैं। स्वामी जी ने कहा कि यह स्थिति तब तक रहती है जब तक समाज के धार्मिक नेता माता–पिता के माध्यम से संकीर्ण धर्म, मजहब, मत–मतान्तर आदि के जहरीले कीटाणु उनके दिल और दिमाग में नहीं घुसा देते।

तालियों की गड़गड़ाहट के बीच स्वामी जी ने कहा कि संकीर्ण साम्प्रदायिक धर्म से बच्चों को दूर रखना अत्यन्त आवश्यक है। कम से कम 18 वर्ष की आयु तक बच्चों को मजहबी बातों से दूर रखा जाना चाहिए और जब वे वयस्क हो जायें तब उन्हें बेशक यह आजादी दी जाये कि वे किसी साम्प्रदायिक धर्म को स्वीकार करना चाहते हैं अथवा नहीं। वे हिन्दू, मुसलमान बनना चाहते हैं अथवा सामान्य इन्सान बने रहकर मानव धर्म निभाना चाहते हैं। स्वामी जी ने अपनी बात को स्पष्ट करने के लिए एक प्रसिद्ध गीत की पंक्तियाँ गाते हुए कहा कि –

तू हिन्दू बनेगा न मुसलमान बनेगा।
इन्सान की औलाद है, इन्सान बनेगा।।

स्वामी जी ने कहा कि वयस्क होने पर यदि किसी मत–मतान्तर का चुनाव होता है तो उसे धार्मिक स्वतन्त्रता की कोटि में रखा जा सकता है। लेकिन दस दिन या दस महीने के शिशु पर थोपा गया धर्म, धार्मिक रीति–रिवाज, कर्मकाण्ड, अन्धविश्वास, रुढ़िवाद और वह सब कुछ जो अनिवार्य रूप से किसी साम्प्रदायिक धर्म के हिस्से होते हैं वह उसकी गुलामी के प्रतीक हो सकते हैं न कि स्वतन्त्रता के।

स्वामी जी ने सुझाव दिया कि 18 वर्ष से कम आयु के बच्चों को केवल मानव मात्र के कल्याण के लिए आध्यात्मिक मूल्यों का शिक्षण प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए न कि किसी संकीर्ण साम्प्रदायिक धर्म मजहब का।

स्वामी जी के क्रान्तिकारी विचारों से अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी में एकत्रित सभी धर्माचार्य स्तब्ध हो गये क्योंकि अपने अपने साम्प्रदायिक धर्म को कोई भी संकीर्ण और भेदभावपूर्ण मानने के लिए तैयार नहीं था।

वियना में सेण्टर के उद्घाटन के अवसर पर यू. एन. ओ. के महासचिव बान की मून तथा अन्य बोर्ड ऑफ डाइरेक्टर के साथ स्वामी जी

ज्ञातव्य हो कि स्वामी अग्निवेश जी ने यह संकल्प लिया है कि वे विश्व स्तर पर उक्त विचारों को अपने वैब साइट, फेसबुक आदि के द्वारा प्रसारित करेंगे तथा लोगों को जागरूक करेंगे। उन्होंने कहा कि मेरे प्रयासों से यदि एक प्रतिशत लोग भी इससे प्रभावित होकर समर्थन करते हैं तो यह शिक्षा जगत में क्रान्ति का आगाज होगा।

भवन्ति नम्रास्तरवः फलोद्गमैः नवाम्बुभिर्भूरि विलम्बिनो घनाः।
अनुद्धताः सत्पुरुषाः समृद्धिभिः स्वभाव एवेष परोपकारिणाम्।।

(नीतिशतकः 71)

जिस प्रकार फलों के आने से लोगों के उपकार के लिए वृक्ष नीचे झुक जाते हैं ताकि प्राणी उन फलों को खा सकें। जिस प्रकार जलों को अपने अन्दर भरकर इस धरती को हरा–भरा बनाने के उपकार के लिए बादल जल की वर्षा करते हैं। इसी प्रकार स्वयं कोई कामना न रखते हुए सम्पूर्ण ऐश्वर्य से सम्पन्न होने पर भी सज्जन लोग दूसरों के प्रति बिना भेदभाव के उदार एवं परोपकारी होते हैं। क्योंकि निर्मल मन वाले परोपकारी व्यक्ति ऐसे ही स्वभाव वाले होते हैं।

सम्पादक
प्रो. विडुलराव आर्य

संस्कृत साहित्य में विलियम जोन्स का योगदान

– डॉ. भवानीलाल भारतीय

भारत पर अपना प्रशासनिक तथा राजकीय आधिपत्य स्थापित करने के पश्चात् विदेशी शासकों का ध्यान यहाँ की भाषा तथा साहित्य की ओर गया। मुस्लिम शासन काल में राजकीय कामकाज की भाषा फारसी थी किन्तु अंग्रेजों को यह समझने में देर नहीं लगी कि भारत की आत्मा संस्कृत भाषा और उसमें लिखे साहित्य में बसी है। आसेतु हिमाचल तथा अटक से कटक तक विस्तृत भारत के निवासी अपने जीवन मूल्यों को संस्कृत में निबद्ध देखते हैं। फलतः इन लोगों ने संस्कृत सीखने तथा इसके विशाल साहित्य के अध्ययन में मन लगाया। इस कार्य का आरम्भ किया सर विलियम जोन्स ने जो मार्च 1783 में बंगाल के सुप्रीम कोर्ट का न्यायाधीश बनकर कलकत्ता आया था। इसी ने भारत के साहित्य, कला तथा इतिहास से संसार की अन्य जातियों को परिचित कराया। 27 अप्रैल, 1794 को मात्र 48 वर्ष की आयु पाकर स्मृति शेष हो जाने वाले विलियम जोन्स ने अपने अल्प कार्यकाल में जिस सारस्वत सत्र को सम्पन्न किया वह आश्चर्यजनक तथा अपूर्व था। ईस्ट इण्डिया कम्पनी के प्रथम प्रशासक वारेन हेस्टिंग्स के सहयोग एवं संरक्षण में उसने प्राच्य विद्याओं के अध्ययन एवं अनुसंधान के लिए एशियाटिक सोसाइटी की स्थापना की तथा प्राच्य विद्याओं के अध्ययन में रुचि रखने वाले गिने चुने लोगों को इसका सदस्य बनाया। वह स्वयं इस सोसाइटी का अध्यक्ष था।

संस्कृत सीखने में जोन्स को जो कठिनाई उठानी पड़ी उसका उल्लेख पं. महावीर प्रसाद द्विवेदी ने अपने एक लेख में किया है। सुप्रीम कोर्ट के इस न्यायाधीश ने संस्कृत सिखाने के लिए बंगीय पण्डितों से निवेदन किया तो उनका उत्तर सर्वथा निराशाजनक ही नहीं, अपमानजनक भी था। विद्या के दम्भ से ग्रस्त इन कथित पण्डितों का कहना था कि एक मलेच्छ को देवभाषा सिखाना सम्भव ही नहीं है। गोमांस तक का सेवन करने वाले ये फिरंगी संस्कृत सीखने के अधिकारी नहीं हैं। अन्ततोगत्वा जब इन्हीं पण्डितों को महारानी विक्टोरिया की आकृति युक्त पर्याप्त रौप्य मुद्राओं का लालच दिया गया तो उन्होंने इस कथित मलेच्छ को भी संस्कृत पढ़ाना स्वीकार कर लिया। फिर भी तुर्रा यह रहा कि सीखने वाला उच्च पदस्थ विलियम जोन्स भी पण्डित जी के घर पर एक चटाई पर विनम्र भाव से बैठेगा तथा पाठ समाप्त होने पर जब वह गुरु गृह से चला जायेगा तो उस स्थान को गंगाजल (हुगली नदी) के प्रक्षालन द्वारा शुद्ध किया जायेगा। धन्य है विद्या के लिए अपमानपूर्ण शर्त को स्वीकार करने वाला यह विद्यालिप्सु अंग्रेज।

जोन्स के निधन के पश्चात् उसके समग्र साहित्य को छः बृहत जिल्दों में समाविष्ट किया गया। प्रथम खण्ड की भूमिका खुद लेडी जोन्स ने लिखी जिसमें उसने अपने विद्या व्यसनी पति के साहित्य का व्यापक आकलन किया है। वस्तुतः तुलनात्मक देवगाथावाद तथा विभिन्न प्राच्य भाषाओं से पश्चिम को परिचित कराने वाला प्रथम विद्वान् विलियम जोन्स ही था। उसने भारतीय भाषाओं के अतिरिक्त चीनी, फारसी तथा अरबी साहित्य का प्रारम्भिक परिचय प्रस्तुत किया साथ ही प्राचीन आर्यावर्तीय राजाओं की वंशावलियों तथा मन्वन्तरों की कालगणना का विवेचन किया।

'लिट्रेचर ऑफ हिन्दूज' नामक ग्रन्थ में उसने विभिन्न विद्याओं (14 विद्याओं) का परिचय दिया तथा भारतीय ज्योतिष, संगीत, वनस्पतियों तथा यहाँ के प्राणिजगत का विवरण लेखबद्ध किया। उसने सिद्ध किया कि शतरंज के खेल (चतुरंग) का प्रथम आविष्कार भारत में हुआ और यहीं से वह फारस में गया। जोन्स ग्रन्थावली का दूसरा भाग मुख्यतः भारत के वानस्पतिक जगत् को समर्पित है इसमें ऋतु क्रम के अनुसार इस धरती के उद्भिज जगत् की एक सुरम्य झांकी प्रस्तुत की गई है। विलियम जोन्स का प्रमुख कार्य मनुस्मृति तथा इसकी विख्यात टीका (कुल्लूक रचित मन्पवर्थमंजरी) का अंग्रेजी अनुवाद करना था। इसके लिए उसने तत्कालीन गवर्नर जनरल लॉर्ड कार्नवालिस से यह कहकर आज्ञा ली थी कि भारत के प्रशासन तथा यहाँ की न्याय व्यवस्था का सुचारू संचालन तभी सम्भव है जब प्रशासक तथा न्यायाधीश मनुस्मृति के विधान से परिचित हो। यह कार्य पूरा हुआ तथा मानवधर्म शास्त्र के इस आंग्ल अनुवाद का परिचय पाठकों को निम्न प्रकार दिया गया –

Institute of Hindu Law or the ordiances of manu according to the gloss of culluca (कुल्लूक भट्ट) comprising the indian system of duties civil and religious, verbally translated from the original sanskrit, with preface by sir william jones knight one of the judges of her majesty's supreme Court at fort Wiliam Bengal. Founder and First President of Asiatic Society of Bengal.

उसकी ग्रन्थमाला के तृतीय खण्ड में अष्टादश स्मृतियों का सार दिया गया है। इससे हिन्दू धर्मशास्त्र की समग्र तस्वीर सामने आ जाती है। जोन्स कृत मनुस्मृति के अनुवाद का महत्त्व इस तथ्य से समझा जा सकता है कि लंदन के सेंट पॉल्स केथैड्रल के प्रांगण में जोन्स की जो आवक्ष प्रतिमा स्थापित की गई है वह अपने हाथ में मनुस्मृति की पुस्तक लिए हैं। हिन्दू विधि ग्रन्थ के समानान्तर उसने मुस्लिम विधि संहिता का भी सम्पादन किया जिसमें मुसलमानों में उत्तराधिकार तथा दायभाग की प्रचलित साहित्य के अंग्रेजी अनुवादों का संकलन उसकी ग्रन्थमाला के छठे भाग में हुआ है। इसमें वैदिक मंत्रों अनुवाद के अतिरिक्त हितोपदेश तथा भुशुण्डि रामायण के अनुवाद सम्मिलित है।

कालिदास की विश्व विश्रुत कृतियों से अंग्रेजी पंडित जनसमाज को परिचित कराने का श्रेय सर विलियम को ही है। अभिज्ञान शाकुन्तल की टीका की भूमिका में उसने लिखा कि ईसा की पांचवी शताब्दी में जब ब्रिटेन के निवासी सर्वथा अनपढ़ तथा असंस्कृत थे, सम्राट विक्रमादित्य की सभा के एक रत्न कालिदास ने शाकुन्तल जैसे मूल्यवान काव्य रूपी रत्न को जन्म दिया। इस अनुवार का शीर्षक था – Sacontala of the Fatal Ring. जोन्स ने यहाँ अपने देशवासियों को असभ्य और निरक्षर (Unpolished and unlettered) कहा है। वस्तुतः जोन्स ने ही संस्कृत भाषा की चारूता, वैज्ञानिकता तथा प्रौढ़ता को प्रथम बार पहचाना था। तभी तो उसने लिखा – यह भाषा ग्रीक से अधिक पूर्ण, लैटिन से अधिक समृद्ध तथा दोनों से अधिक परिष्कृत है।

विलियम जोन्स वैदिक देवताओं की स्तुति में लिखे गये ऋग्वेद मंत्रों की भावशबलता, विचार गाम्भीर्य तथा शैलीगत उदात्तता से अत्यधिक प्रभावित था। यही कारण है कि उसने इन मंत्रों के कुछ सूक्तों का भाषान्तर किया। कालिदास के ऋतुसंहार का सर्वप्रथम अंग्रेजी रूपान्तर भी उसने ही किया था। छः खण्डों में समाप्त उसके समस्त ग्रन्थों का यह संकलन सर्वप्रथम उसकी मृत्यु के पांच वर्ष बाद 1799 में छपा था। अल्पवय में परलोकगामी विलियम जोन्स की स्तुति में कोलकाता स्थित एशियाटिक सोसाइटी के प्रांगण में एक स्मारक स्तम्भ स्थापित किया गया है जो आज भी पश्चिमी देशों को संस्कृत भाषा और साहित्य से परिचित कराने वाले इस विद्याव्यसनी अंग्रेज का स्मरण कराता है। लेडी जोन्स के अनुराध पर सर विलियम के मित्र लार्ड टेन माउथ ने Memories of that Life, Writings and Correspondence of Sir William Jones, का सम्पादन किया था।

– 3/5 शंकर कालोनी, श्री गंगानगर

आवश्यकता है अब अदालतों में अंग्रेजी से मुक्ति की : अम्बा चरण वशिष्ठ

अंग्रेज तो हमें 65 साल पूर्व आजाद कर चले गये पर हमारी गुलामी वाली मानसिकता हमारा पीछा नहीं छोड़ रही है। यह स्थास्थिति एक नहीं भारतीय जीवन व प्रशासन के अनेक पहलुओं में उजागर होती है। लॉर्ड मैकाले ने लगभग 8 वर्ष में ही भारतीय दण्ड संहिता (आईपीसी) की रचना कर दी थी और कुछ भारतीय मान्यताओं का ध्यान रख कर उसने भारत पर अंग्रेजी न्याय व्यवस्था थोप दी। पर हम इतने लायक निकले कि इस अंग्रेजी व्यवस्था का हम भारतीयकरण व भारत की भावनाओं और मान्यताओं के अनुरूप नहीं ढाल सके।

आज भी देश की 3 प्रतिशत आबादी ही भली–भांति अंग्रेजी बोल और लिख लेती है। केवल 10 प्रतिशत लोग ही इसे समझ सकते हैं। फिर भी यह हमारी सभी भारतीय भाषाओं व मातृभाषाओं पर हावी है।

कानून किसके लिये हैं। समस्त भारतीय जनता के लिए। पर यह सरल व सहज नहीं है। आम जनता के लिए तो है पर आम जनता की समझ के बाहर है। इसकी पेचीदगियों को तो अच्छा पढ़ा–लिखा अंग्रेजी का ज्ञाता भी नहीं जान सकता। इस कारण हमारी जनता फिजूल के मुकदमों के चक्कर में फंसी रहती है। हम अपने वकीलों की दया पर जीते हैं। उनके कारण ही हम अपना सही मामला हार जाते हैं और झूठा मुकदमा जीत जाते हैं क्योंकि हमें तो कोई समझ है नहीं। हम तो कानून समझ नहीं पाते।

इस स्थिति के लिए सबसे बड़ा दोषी है तो हमारा शासन जिसने कभी कानून को जनता तक पहुँचाने की कोशिश ही नहीं की। इसमें सबसे बड़ा रोड़ा है अंग्रेजी भाषा जिसमें सारा कानून बनता है और न्याय मिलता है। आम आदमी तो अपने वकील के रहमोकरम पर निर्भर है। वह अपना मामला वकील को समझा देता है। आगे सब वकील ही करता है। उसने क्या लिखा या क्या नहीं लिखा है वह उसके द्वारा बताये गये तथ्यों व भावनाओं को व्यक्त करता है या नहीं। वह तो बस हस्ताक्षर करता है उस भाषा में जिसे वह जानता है, अंग्रेजी में नहीं। यदि वह कभी अंग्रेजी में हस्ताक्षर कर भी पाता है तो उसे अंग्रेजी का ज्ञान इतना नहीं है कि वह जो कुछ लिखा है उसे पूरी तरह समझ भी पाये। कई बार तो वह बस अपना अंगूठा ही लगा देता है।

जब मामला अदालत में जाता है तो सुनवाई से पूर्व वकील उससे बैठक करता है। सारा मामला समझाता है। कुछ बिन्दुओं पर वह स्पष्टीकरण भी लेता है। पर जब मामला अदालत में सुनवाई के लिए लगता है तो वहाँ हाजिर तो अवश्य रहता है पर क्या हो रहा है और उसका वकील, उसका विरोधी वकील व न्यायाधीश क्या बोल रहा है, उसे पता नहीं चलता। वह तब अपने आपको भारत में नहीं किसी विदेश में बैठा ही समझता है।

यदि अदालत में कार्यवाही हिन्दी में हो तो वह सब समझ सकता है। उसे पता चल सकता है कि उसके वकील ने सभी तथ्य, पक्ष व दलीलें अदालत के सामने रख दीं जो उसके पक्ष में थी। अपने मामले का सबसे अच्छा जानकार वह होता है। यदि उसका विरोधी या विरोधी पक्ष का वकील कोई गलत तथ्य या दलील रख रहा हो तो वह हस्तक्षेप भी कर सकता है पर केवल तब जब अदालत की कार्यवाही उसकी भाषा में हो जिसे वह समझ सकता हो। वस्तुतः आम आदमी समझ नहीं पाता।

यदि आज हम निर्णय ले लें कि आज से हमारे स्कूलों में अंग्रेजी के साथ–साथ हिन्दी व अन्य भारतीय भाषायें भी पढ़ाई जायेंगी तो अगले 10–12 वर्ष में सभी युवा नागरिक हिन्दी व अन्य भारतीय भाषाओं को भली–भांति लिख–पढ़ बोल सकेंगे। पर शर्म की बात है कि यह काम पिछले 66 साल में नहीं हो सका। इसका कारण केवल और केवल हमारी शासन व राजनीतिक व्यवस्था ही है। इतने सालों में कानून का हिन्दी रूपांतरण क्यों नहीं हो सका।

जनतंत्र को जनता की, जनता द्वारा व जनता के लिए सरकार बताते हैं। ऐसे जनतंत्र में न्याय व्यवस्था भी जनता की, जनता द्वारा व जनता के लिए ही होनी चाहिए। इसीलिए हमारे न्यायालयों व उच्चतम न्यायालय में व्यवहार की भाषा राष्ट्रभाषा हिन्दी ही होनी अत्यन्त आवश्यक है। क्या न्याय व्यवस्था की भाषा राष्ट्रभाषा हिन्दी करने के लिए स्वतंत्र भारत में भी एक भाषा स्वतंत्रता आन्दोलन चलाने की आवश्यकता है यदि है, तो इससे बड़ा कोई मजाक नहीं हो सकता। यह तो बस हमारी नालायकी का ही द्योतक होगा।

– (नवोत्थान लेख सेवा, हिन्दुस्थान समाचार) से साभार

भारतीय नारी की अस्मिता

– पं. विद्यानिवास मिश्र

स्वर्गीय पं. विद्यानिवास मिश्र जी एक सजग, बौद्धिक, निर्भीक कलम के धनी व्यक्ति हैं, उन्होंने अपने लेखन में भारतीय जीवन दृष्टि को बड़े साहस के साथ उभारने का प्रयास किया है। मिश्र जी के लेखन में एक विशेष प्रकार की व्यापकता और वस्तुनिष्ठता है जो पाठक को सोचने के लिए उद्वेलित करती है। प्रस्तुत लेख ''भारतीय नारी की अस्मिता'' में उन्होंने नारी के विशेष गुणों का वर्णन करते हुए भारतीय नारी को विशिष्ट बनाया है। –सम्पादक

आज के जमाने में स्वामी विवेकानन्द के शब्दों में यह बात करना कि भारत में नारी के रूप में जन्म लेना नर–रूप में भी जन्म लेने से अधिक पुण्य फल है, बहुत अटपटा लगेगा। एक ओर पश्चिमी नारी–स्वाधीनता की आँधी, दूसरी ओर अपने देश में नारी की भोग्य संपदा के रूप में अवधारणा और इन सबके ऊपर मनुष्य मात्र का लोभ, भय और ईर्ष्या से अमानुषीकरण इस सबके बीच 'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः' दंभसूचक वाक्य लगता है।

पर भारतीय मन केवल पोथीवाला मन तो है नहीं। पोथियों की राहें तो बड़ी उलझी हुई हैं। कब किस चौराहे पर आप गलत मोड़ पकड़ लेंगे, कहा नहीं जा सकता। जिस शरत् बाबू के बारे में कहा जाता है कि उन्होंने सतीत्व के आदर्श को एकनिष्ठ प्यार की साधना से छोटा कर दिया, उन्हीं की सृष्टि अन्नदा जीजी है, जो सैकड़ों इंद्रनाथों के मन पर देवी की भास्वर मूर्ति के रूप में छाई हुई है। अन्नदा जीजी से बड़ी सती की कल्पना कोई कैसे कर सकता है। दूसरी ओर, शरत् बाबू का आक्रोश कि ' न स्त्री स्वातन्त्रयमर्हति यह मनु का वाक्य हिन्दू समाज का अभिशाप है, 'अपनी जगह पर अलग तीखी चोट करता है।

पर पोथी की बात छोड़िये। भारतीय नारी 'नरी' नहीं, नारी है। वह नर की वृद्धि है। शास्त्र की बात छोड़ दीजिए, भारतीय लोक–विश्वास में जिसके कन्या नहीं होती है, वह दूसरे की कन्या का कन्यादान करके तरना चाहता है। कन्या दो कुलों को तारती है, पुत्र केवल एक कुल को। अकेली बेटी का बाप होने के कारण कन्या पर मेरी ममता शायद कुछ अधिक हो, अनेक कन्याओं वाले लोग कन्या का जन्म अभिशाप मानते हैं, मानें, पर मुझे बराबर विवाह के एक गीत की पहली कड़ी याद आती है –

'काहे बिन सून अँगनवा ए बाबा
काहे बिन सून लखराँव
काहे बिन सून दुअरवा ए बाबा
काहे बिन पोखरा तोहार!'
'तुहरे बिन सून अँगनवा ए बेटी
कोइलारे बिन लखराँव
पूत बिन दुअरवा ए बेटी
हंसा बिन पोखरा हमार!'

कन्या पिता से पूछती है – पिता जी, किसके बिना आँगन सूना हो जाता है, किसके बिना आमों का बाग, किसके बिना दरवाजा सूना लगता है, किसके बिना तुम्हारा पोखर?पिता उत्तर देते हैं – बेटी, तुम्हारे बिना आँगन सूना हो जायेगा, कोयल के बिना आमों का बाग, पुत्र के बिना दरवाजा सूना लगता है और हंस अर्थात् दामाद के बिना मेरा पोखर। और मैं बराबर अनुभव करता हूँ, हजार–हजार लड़कियाँ हजार–हजार बागों में कुहक रही हैं, हजार–हजार बाग सूने हो रहे हैं, हजार–हजार आँगन रो रहे हैं।

मेरी लड़की मिनी अब भी आती–जाती है, पर जो लड़की सत्रह वर्षों तक मेरे घर–मन के आँगन की गौरैया बनी निर्भय फुदकती रही, वही लड़की कहती है – 'बाबूजी, आप मुझे तो पूछते नहीं, अपनी धेवती को ही पूछते हैं। इसने मेरा अधिकार छीन लिया।' अपनी ही बिटिया से इस तरह वह माख करती है तो लगता है, वह फिर छोटी हो गई है; पर साथ ही उसके लिए मोह–छोह मेरी धेवती आमोदिनी के मोह–छोह में रूपांतरित हो गया है। मिनी माँ हो गई है, आमोदिनी से लड़ती है, पर उसे छोड़कर अपनी ससुराल जाने लगती है तो एकाएक बडी हो जाती है, उसकी आँखें अँसुआ जाती हैं। मैं हिसाब लगाने बैठता हूँ तो भारतीय नारी में हजार रिश्तों के केन्द्र समाहित दीखते हैं, वह सहस्र दलकमल दीखती है। उसकी जड़ एक अलग जमीन में धँसी रहती है, उसका नाल एक अव्यक्त प्यार में लहराता रहता है, जिसे हिन्दुस्तानी समाज में मुखरित करना शील के प्रतिकूल माना जाता है।

उसकी पुरइन उस जल के ऊपर असंपृक्त पसरी रहती है। वह रस लेती रहती है– अपने मैके से, वाणी की तरह, लक्ष्मी की तरह लहराती रहती है। अपनी ससुराल में। उसके सहस्र दल सहस्र शोभा की किरण बनकर सहस्र दिशाओं को प्रकाशित करते रहते हैं – किसी की ननद है, किसी की भाभी, किसी की जेठानी, किसी की देवरानी, किसी की दीदी, किसी की लाड़ली, किसी की पतोहू, किसी की अनुज–वधू, किसी की चाची, किसी की मौसी, किसी की बुआ – इन सहस्र सम्बन्धों से एक होकर वह पूर्ण प्रस्फुटित कमल बनती है, तभी उसके भीतर पराग भरता है, उस पराग के कण–कण में नई रस–सृष्टि के बीज पड़ते हैं। भारतीय संस्कृति उन पराग कणों में मधुपावली बनकर बीज मंत्र पढ़ती है – सम्पूर्ण उत्सर्ग के, सम्पूर्ण प्यार के, सम्पूर्ण शक्ति के।

नर के शरीर में देवता का निवास तो होता है और नर–शरीर देव–दुर्लभ भी होता है, क्योंकि नर–शरीर से देवता की साधना की जा सकती है, परन्तु नर का शरीर देवता नहीं होता, यह नारी का शरीर है, जो देवता का साक्षात् विग्रह है। 'स्त्रियः समस्त्रास्तव देवि भेदाः' (दुर्गा सप्तशती) के द्वारा यही दुहराया गया है। स्त्री की प्रत्येक भंगिमा में देवी का कोई न कोई भाव, कोई न कोई सौंदर्य (कोमल हो या कठोर) रूपायित रहता है। नारी का शरीर भोग्य नहीं है, वस्तु नहीं है, वह शक्ति का प्रस्फुरण है। शक्ति के कई स्तर होते हैं, वह जिलाती है, मारती है, सुलाती है, जगाती है, हंसाती है, रुलाती है, दुलराती है, कोसती है, पोसती है, हर एक दशा में नर के चैतन्य को कसौटी पर कसती रहती है।

निरे यौन आकर्षण के केन्द्र में रहने वाली नारी चुक जाती है, चुक जाय; निरी बांधावी विरस हो जाती है, हो जाये; निरी कन्या पराई हो जाती है, हो जाये; निरी माँ बोझ हो जाती है, हो जाये; पर भार बनकर आती है और तीन दिन रहना भी उसका दुस्सह हो जाता है। पर गाँव का आदमी हूँ, माँ के हाथ की रसोई अमृत लगती है।

संयुक्त परिवार शहरीकरण और उद्योगीकरण से भले ही टूट जाये, पर हिन्दुस्तान के सनातन हिन्दुस्तानी मन के पारिवारिक बोध में टूटन नहीं आयेगी। हम कितने भी शहरी क्यों न हो जायें, अपने पड़ोसी के बच्चे के लिए 'हाइ जैक', 'हाइ गिल' नहीं है; चाचा हैं, चाची हैं। मित्र की पत्नी मित्र उम्र में छोटे हुए तो बहू है, बड़े हुए तो भाभी है, सुंदरी नहीं है। इसका एकमात्र कारण भारतीय नारी की गरिमापूर्ण अस्मिता है, जो केवल 'मैं हूँ' नहीं सोचती, 'मुझमें इतने भाव हैं, मैं उन भावों की परिपूर्णता हूँ' – इतनी दूर तक सोचती है। इस अस्मिता का जितना अधिक प्रस्फुटन होगा उतना ही कम अवसर होगा कुंठा का, टूटन का, एकाकीपन का, यौन स्वच्छंदता में पलायन का, जवानी के लिए बिसूरने का, जवान बने रहने के लिए दयनीय साधना का और अपने को मात्र 'नरी' मानने की विवशता का।

हिन्दुस्तान में स्त्री–पुरुष के समान स्तरीय सम्बन्ध भी इतने विविध हैं, और उनके खट–मिट्ठे आस्वाद इतने अलग–अलग और प्रत्येक अपने में अद्वितीय है कि दूसरे समाज मे उतने खुले और उतने सहज सम्बन्ध दिखेंगे ही नहीं। श्रीकृष्ण और कृष्णा (द्रौपदी) का सख्य इसका एक अप्रतिम उदाहरण है। 'उत्तररामचरित' में वन–देवता वासंती राम से जो मानवीय रिश्ता जोड़ती है, उसके आधार पर राम को एक ओर तो बड़ी से बड़ी बात सुनाती है, दूसरी ओर राम की दशा से द्रवित होकर सीता को ही उलाहना देने लगती है, उस स्नेह का कहीं जोड़ नहीं मिलेगा।

हिन्दुस्तान के रिश्ते व्यक्ति और व्यक्ति के बीच नहीं होते, एक सम्बन्ध चक्र और दूसरे सम्बन्ध चक्र के बीच होते हैं। दो जड़ सत्ताओं के बीच नहीं होते, दो गति विवर्तों के बीच में होते हैं। साहचर्य सम्बन्ध का एक चक्र है; मैं हूँ, मेरे भाई हैं, मेरे मित्र हैं, अब मेरे मित्र की पत्नी मेरी भ्रातृ पत्नी की तरह होगी, मेरे मित्र का साला मेरा साला हो जायेगा। गतिशीलताओं के जुड़ने की यह प्रक्रिया एकाध रिश्तों की कमी की पूर्ति करती रहती है। एकाध रिश्तों के अभाव भरती रहती है। भारतीय नारी अलग–अलग क्षणों में माया, मोहमयी रजनी, काली कंकाली, दयामयी, रागमयी, लालसामयी लक्ष्मी और सात्त्विक उल्लासमयी, प्रकाशमयी, अर्पणमयी सरस्वती दीखती है; पर समग्र रूप में वह सृष्टि है, सृष्टि की आकांक्षा है, सृष्टि की साधना है।

नर के शरीर में देवता का निवास तो होता है और नर–शरीर देव–दुर्लभ भी होता है, क्योंकि नर–शरीर से देवता की साधना की जा सकती है, परन्तु नर का शरीर देवता नहीं होता, यह नारी का शरीर है, जो देवता का साक्षात् विग्रह है। 'स्त्रियः समस्त्रास्तव देवि भेदाः' (दुर्गा सप्तशती) के द्वारा यही दुहराया गया है। स्त्री की प्रत्येक भंगिमा में देवी का कोई न कोई भाव, कोई न कोई सौंदर्य (कोमल हो या कठोर) रूपायित रहता है। नारी का शरीर भोग्य नहीं है, वस्तु नहीं है, वह शक्ति का प्रस्फुरण है। शक्ति के कई स्तर होते हैं, वह जिलाती है, मारती है, सुलाती है, जगाती है, हंसाती है, रुलाती है, दुलराती है, कोसती है, पोसती है, हर एक दशा में नर के चैतन्य को कसौटी पर कसती रहती है।

स्वामी विवेकानन्द के अमरीका में दिए गए व्याख्यान के संदर्भ से अपनी बात समेटना चाहूँगा। उन्होंने कहा था कि भारतीय नारी इसी माने में विशिष्ट है कि वह संतान के लिए तप करती है; प्रजनन कामोदिष्ट है, धर्मोदिष्ट है, धर्म से भी ऊपर जाकर मोक्ष के लिए उदिष्ट है; माता होकर ही वह मुक्त होती है, क्योंकि सृष्टि ही मुक्ति है और सृष्टि भी वह जो तप से हुई हो, ऋत और सत्य के रूप में हुई हो। कितनी मनौती मानती है, कितने देवी–देवताओं का ध्यान करती है, कितने व्रत–अनुष्ठान करती है और तब उसके राम जन्म लेते हैं – उसको उसके अहंकार से उद्धृत करने वाले, उसकी कोख से सीता जन्म लेती है, दशरथ के कुल को भी तारने वाली। जनक के कुल को भी तारने वाली भारतीय नारी मुक्ति के लिए आंदोलन नहीं करतीं, मुक्ति की, स्वाधीनता की, स्व–नियंत्रण की, स्वोत्सर्ग की साकार मूर्ति के रूप में अपने को रचकर उच्च स्तर की स्वाधीनता का प्रेरणास्रोत बनती है।

सबसे अधिक बंधुआ मजदूर भारत में

— स्वामी अग्निवेश

न्यूनतम मजदूरी नहीं पाने वाला भी बंधुआ मजदूर

पिंक सिटी प्रेस क्लब जयपुर में एक्शन एण्ड संस्था की ओर से बाल व बंधुआ मजदूर विषय पर आयोजित संवाददाता सम्मेलन में प्रसिद्ध सामाजिक कार्यकर्ता बंधुआ मुक्ति मोर्चा के अध्यक्ष तथा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी अग्निवेश जी ने कहा कि दुनियाँ में सबसे अधिक बंधुआ मजदूर भारत में है। सरकार किसी की भी हो लेकिन बंधुआ और बाल मजदूरों को छुटकारा दिलाने के लिए ठोस कार्यवाही नहीं की जाती। उन्होंने कहा कि 45 करोड़ मजदूर असंगठित क्षेत्र में और 5 करोड़ बाल मजदूर देश के काम कर रहे हैं। इनमें वे लोग भी शामिल है जो कि विभिन्न संस्थानों में कार्यरत हैं लेकिन सरकार की ओर से निर्धारित न्यूनतम वेतन भी नहीं प्राप्त कर पा रहे हैं। स्वामी जी ने कहा कि राष्ट्रीय स्तर पर कार्य कर रही मनरेगा योजना में न्यूनतम मजदूरी से भी कम मजदूरी देकर बंधुआ मजदूर के रूप में काम करवाया जा रहा है। स्वामी जी ने बंधुआ मजदूरों को मुक्त कराकर पुनर्वास दिलाने की सरकार से जोरदार माँग की।

ज्ञातव्य है कि "जनता मालिक तथा सरकार सेवक" और "कमाने वाला खायेगा लूटने वाला जायेगा तथा नया जमाना आयेगा" जैसे नारों द्वारा बंधुआ मुक्ति की लड़ाई स्वामी अग्निवेश जी वर्षों से लड़ रहे हैं। पिछले तीन वर्षों से बंधुआ मुक्ति मोर्चा की पहल पर देश भर से लगभग 900 से भी अधिक छत्तीसगढ़िया बंधुआ और बाल मजदूरों को मुक्त करवाया जा चुका है और समस्त बंधुआ मजदूरों के पुनर्वास के लिए सरकार से लड़कर आदेश जारी करवाये गये।

एक्शन एड इंडिया की राजस्थान प्रमुख शबनम अजीज ने अपने वक्तव्य में कहा कि सरकार ने विधानसभा में राज्य में एक भी बंधुआ मजदूर नहीं होने की बात कही थी लेकिन प्रेसवार्ता में बंधुआ मजदूरों की उपस्थिति से साफ है कि आज भी यहाँ बंधुआ मजदूर हैं। उन्होनें माँग की कि सरकार इनके पुनर्वास के लिए मुख्य सचिव की अध्यक्षता में टीम बनाये।

अपराधों की रोकथाम के लिए जरूरी है कि देश में पूर्ण शराबबंदी हो

— स्वामी अग्निवेश

बंधुआ मुक्ति मोर्चे के अध्यक्ष एवं सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी अग्निवेश जी का कहना है कि अपराधों की रोकथाम के लिए देश में पूर्ण शराबबन्दी लगाई जाये। उन्होंने कहा कि देश में आज बलात्कार, अपहरण, यौन हिंसा आदि अपराध बढ़ रहे हैं। इनकी रोकथाम के लिए सरकार को कानून बनाकर फांसी जैसी सज़ा जैसे कठोर प्रावधान करने पड़ रहे हैं। उनका कहना था कि ये सभी अपराध मदिरापान करने के बाद बदलने वाली मानसिकता की देन है। गुजरात की तरह हर प्रेदश में अगर पूर्ण शराबबंदी लगा दी जाये तो देश की तस्वीर बदलने और अपराध रहित समाज कायम करने में सहयोग मिल सकता है।

उन्होंने कहा कि हर प्रदेश की सरकारें अपने जीडीपी बढ़ाने की दौड़ में लग रही हैं, जिसकी आड़ में शहरों के साथ–साथ गाँवों व कस्बों में शराब की खुली बिक्री की जा रही है जीडीपी बढ़ाने के चक्कर में जनस्वास्थ्य, समाज और घर खराब हो रहे हैं। शराब की कम्पनियाँ सोडा व पानी के नाम से अपने ब्रांड का प्रचार–प्रसार कर रही हैं। बिहार की स्थिति को खराब बताते हुए कहा कि वहाँ महिलाएँ शराब के विरोध में आंदोलन कर रही हैं। राजस्थान में निर्धारित समय के बाद अवैध तरीके से शराब की बिक्री की जा रही है।

उन्होंने बताया कि वह 26 जनवरी से पूरे देश में घूम–घूम कर शराबबंदी के लिए जन–जागरण का कार्य कर रहे हैं। अभी तक त्रिचुनापल्ली, देहरादून, बिहार आदि स्थानों पर सभाएँ कर चुके हैं और शीघ्र ही भुवनेश्वर, छत्तीसगढ़, आन्ध्र प्रदेश, हरियाणा आदि में सभाएँ करने की योजना है। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के कार्यकारी प्रधान एवं आर्य प्रतिनिधि सभा, राजस्थान के प्रधान श्री सत्यव्रत सामवेदी जी ने बताया कि आगामी चुनावों में शराबबंदी को ध्यान में रखते हुए एक तीसरी शक्ति के रूप में संगठन तैयार किया गया है। यह संगठन शराबबंदी को समर्थन देने वाले जन प्रतिनिधियों को ही टिकट देने की पहल करेगी और शराब पीने वाले उम्मीदवारों का विरोध करेगी।

कम उम्र में विवाह से नहीं रूकेंगे बलात्कार

— राम पुनियानी

हरियाणा में हाल में बलात्कार की घटनाओं की श्रृंखला ने इस गंभीर और क्रूर अपराध के कारणों पर एक बहस की शुरुआत कर दी है। इन घटनाओं को कैसे रोका जा सकता है। इस बारे में भी अलग–अलग राय व्यक्त की जा रही है। प्रगतिशील दृष्टिकोण वाले तबके का मानना है कि बलात्कार के पीछे लैंगिक असमानताएं हैं और इन्हें रोकने के लिए महिलाओं का सशक्तिकरण और कुछ कानूनी उपाय किए जाना आवश्यक है। दूसरी ओर इस बारे में दकियानूसी वर्ग की सोच भी दिलचस्प है।

कुख्यात खाप पंचायतों का कहना है कि चूंकि आज कल लड़कियाँ 11 वर्ष की आयु में ही युवा हो जाती हैं इसलिए उनके विवाह की न्यूनतम आयु घटकार 15 वर्ष कर दी जानी चाहिए। हरियाणा के पूर्व मुख्यमंत्री ओमप्रकश चौटाला ने इस मांग का समर्थन करते हुए कहा कि 'पूर्व में व विशेषकर मुगल काल में' माता–पिता अपनी लड़कियों की शादी कम उम्र में कर दिया करते थे ताकि उन पर इस तरह के अनाचार न हो सकें। इस समय हरियाणा में वैसी ही स्थिति है जैसी की मुगल काल में थी। अफसोस कि इन वरिष्ठ नेता जी के शानदार सुझाव में कई छेद हैं। पहली बात तो यह है कि अगर विवाह से बलात्कार रूकते होते तो इतनी बड़ी संख्या में विवाहित महिलाएँ बलात्कार का शिकार क्यों होतीं क्या यह सही है कि मुगलकाल में हिन्दू महिलाओं को मुगलों के क्रूर पंजों से बचाने के लिए उनका कम उम्र में विवाह कर दिया जाता था। यह मान्यता समाज के एक वर्ग में गहरे तक बैठी हुई है। अलाउद्दीन खिलजी के हाथों अपमानित होने से बचने के लिए रानी पद्मिनी द्वारा किया गया जौहर इस अत्याचार की एक मिसाल बताया जाता है।

परन्तु क्या कोई दावे के साथ यह कह सकता है कि महिलाओं के साथ बलात्कार या अत्याचार केवल मुगल साम्राज्य में या मुस्लिम राजाओं द्वारा किये जाते थे। क्या अन्य धर्मों के राजा–महाराजा सभी पराई स्त्रियों को केवल बहिन मानते थे। जब शिवाजी की सेना ने कल्याण पर हमला किया तब उनकी सेना ने धन–सम्पत्ति तो लूटी ही, वहाँ के राजा की बहू को भी शिवाजी के सैनिक अपने राजा के लिए बतौर उपहार अगवा कर ले गए। यह अलग बात है कि शिवाजी ने उसे ससम्मान उसके घर वापिस भेज दिया। विजयी सेनाओं द्वारा विजित

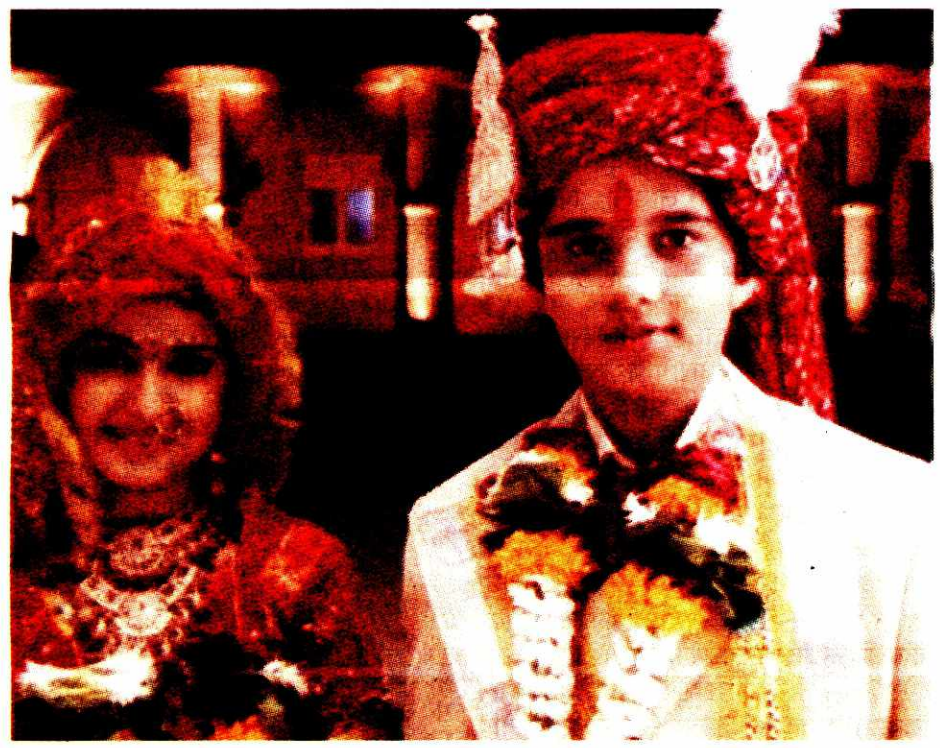

राज्य में लूटमार करना और वहाँ की महिलाओं के साथ बलात्कार करना, सामंती युग में आम था और यह प्रवृत्ति किसी धर्म विशेष के राजाओं या सेना तक सीमित नहीं थी। केवल मुस्लिम शासकों और सामंतों को इसके लिए दोषी ठहराना, इतिहास के साम्प्रदायिकीकरण का हिस्सा है, जो कि हमारे अंग्रेज शासकों ने 'फूट डालो और राज करो; की अपनी नीति के तहत किया था। इस सिलसिले में यह भी ध्यान में रखा जाना चाहिए कि मुगल सेनाओं में सिर्फ मुसलमान नहीं होते थे। उनमें हिन्दुओं की भी बड़ी संख्या होती थी। जैसे 'राजा मानसिंह' अकबर की सेना के सेनापति थे और औरंगजेब की सेना की कमान मिर्जा राजा जयसिंह के हाथों में थी। इसके बावजूद औरंगजेब और अकबर की सेनाओं ने वही सब किया जो दुनिया की सारी सेनाएं करती हैं अर्थात् निर्दोषों को मारना, लूटना और महिलाओं के साथ बलात्कार। यह सिलसिला आज भी कश्मीर, उत्तर पूर्व और देश के कई अन्य इलाकों में जारी है। क्या हम थंगजम मनोरमा को भूल सकते हैं, जिसके साथ मणिपुर में सन् 2004 में असम राईफल्स के 17 जवानों ने सामूहिक बलात्कार किया था और बाद मे उसकी हत्या कर दी थी। यह हमारे राष्ट्र पर लगा एक ऐसा काला धब्बा है जिसे मिटाना आसान नहीं होगा। स्पष्टतः बलात्कार का धर्म से कोई वास्ता नहीं है। उल्टे धर्म तो बाल विवाह और सती प्रथा जैसी कुप्रथाओं का जनक है। 19वीं सदी में जब सुधारवादियों ने लड़कियों के विवाह की न्यूनतम आयु में बढोत्तरी की मांग उठाई तब परम्परावादी और दकियानूसी तबके ने इसके विरोध में यह कहा कि लड़कियों को अपने पहले मासिक धर्म के समय अपने पतियों के पास ही होना चाहिए क्योंकि यह धार्मिक दृष्टि से आवश्यक है। परम्परावादी मुसलमान भी लड़कियों की शादी की न्यूनतम आयु घटाने की मांग करते रहते हैं।

यह तथ्य कि दोनों समुदायों के एक तबके के विवाह जैसे महत्त्वपूर्ण विषय पर महिलाओं के स्वनिर्माण के अधिकार के बारे में एक से विचार हैं, साबित करता है कि इस मुद्दे का धर्म से कोई सम्बन्ध नहीं है। असल में दकियानूसी वर्ग नहीं चाहता कि महिलाओं का उनके स्वयं के जीवन पर नियंत्रण हो क्योंकि इससे पितृसत्तात्मकता कमजोर होती है। पितृसत्तात्मकता को धर्म के नाम पर समाज पर लादना आसान होता है। कम उम्र में शादी होने से लड़कियाँ अपने पतियों और ससुरालवालों की गुलाम बनने पर मजबूर हो जाती हैं। कम उम्र में माँ बनने और घरेलू जिम्मेदारियों के बोझ तले दबने से उन्हें जो कष्ट भोगने पड़ते हैं, वे अलग हैं। कम उम्र में विवाह और गर्भधारण से बच्चे और माँ दोनों के जीवन को खतरा होता है, ऐसी चिकित्सकीय राय है। इसलिए असल में यह संघर्ष सामंतवादी नियम समाज पर थोपने के इच्छुक लोगों और उनके बीच है जो पितृसत्तात्मक नियंत्रण से समाज को मुक्त करना चाहते हैं। महिलाओं का शिक्षण, रोजगार और सशक्तिकरण, सामाजिक सुधार की आवश्यक शर्त है। स्वनियुक्त कानून निर्माताओं के आदेशों को गंभीरता से लेने की कतई आवश्यकता नहीं है। जहाँ तक हरियाणा का प्रश्न है, वहाँ खाप पंचायतों के जरिए जमीनी स्तर पर प्रजातंत्र को मजबूत करने से ही हम न्यायपूर्ण और लैंगिक समानता वाले समाज का निर्माण कर सकेंगे।

–लेखक आई आई. टी. मुम्बई में पढ़ाते थे और सन् 2007 के नेशनल कम्यूनल हार्मोनी एवार्ड से सम्मानित हैं।

'नित्यनूतन' से साभार

शराब ने खराब किया 48 फीसद लोगों का लिवर

यकृत एवं पित्त संस्थान में 40 हजार रोगियों पर कराए गए अध्ययन में हुआ खुलासा शराब का सेवन करने वालों में महिलाएं भी हैं आगे – ज्ञानप्रकाश / एसएनबी

नई दिल्ली। राजधानी में पियक्कड़ों की संख्या बढ़ने के साथ ही यकृत (लिवर) रोगियों की संख्या में तेजी से इजाफा हो रहा है। यकृत एवं पित्त संस्थान (आईएलबीएस) में दो साल के दौरान करीब 40 हजार रोगियों पर किए गए अध्ययन से पता चला है कि यहां आने वाले यकृत रोगियों में से 48 फीसद से भी अधिक लोग भारी मात्रा में शराब के सेवन के आदी पाए गए। ज्यादा शराब पीने से उनके यकृत में चर्बी की मात्रा सामान्य से कहीं ज्यादा पाई गई। अध्ययन में शामिल कुल रोगियों में से 10 फीसद महिलाएं भी शराब की वजह से यकृत संबंधी बीमारियों से पीड़ित पाई गई।

अध्ययन के संयोजक एवं आईएलबीएस के निदेशक व प्रख्यात गैस्ट्रो एंट्रालॉजिस्ट डा. एसके सरीन ने कहा कि जानलेवा मोटापा, मधुमेह, ह्रदय की तरह ही अब तेजी से यकृत संबंधी रोगियों की संख्या बढ़ रही है। उन्होंने कहा कि अध्ययन में शामिल 48 फीसद लोगों के यकृत में फैट की अधिकता और सूजन की पुष्टि हुई। इसकी वजह जानने के लिए उनकी सेप्रेट बायोप्सी और सीटी, एमआरआई की गई जिसकी वजह ज्यादा शराब पीना पाया गया। इसमें .5 फीसद महिलाएं भी पाई गई। बीते सालों तक यह आंकड़ा 100 में से एक था। अध्ययन में 18 साल से 65 साल तक की आयु के लोगों को शामिल किया गया। 48 फीसद लोग पीलिया, खून की उल्टी होना, शरीर की हड्डियां कमजोर होने, पेशाब पीला होने जैसे लक्षण के बाद संस्थान पहुंचे। मरीजों से एक फार्म भरवाया गया, जिसमें पांच प्रश्न पूछे गए। इसके तहत शराब पीते

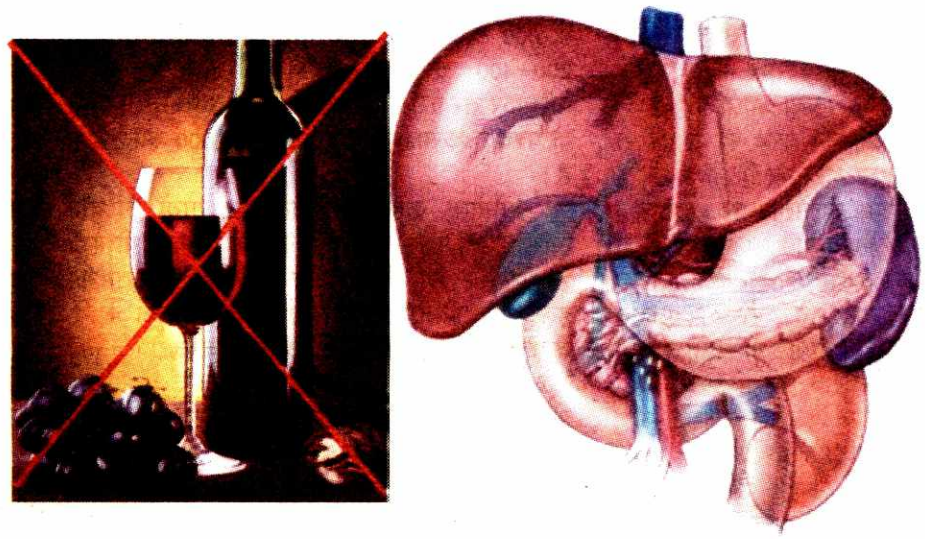

है या नहीं, यदि पीते हैं तो कब से और हर दिन कितनी मात्रा में। इसमें यह भी पूछा गया कि सप्ताह में या फिर कभी–कभी लेते हैं। किस ब्रांड को वे पसंद करते हैं। इसमें 20 फीसद ने कहा कि उनकी अपनी ब्रांड है वे जब ज्यादा तनाव में होते हैं तो ज्यादा शराब का सेवन करते हैं और सामान्य दिनों में वे चार से अधिक पैग लेने से गुरेज नहीं करते हैं। वहीं 28 फीसद ने कहा कि उन्हें जो भी ब्रांड मिल जाए वे सहजता से ले लेते हैं। पुरुषों ने कहा कि उनकी अपनी कोई पसंद नहीं है, जैसी पॉकेट अनुमति देती है वे शराब पी लेते हैं, इसके साथ ही वे गोश्त, तली खाद्य वस्तुएं और सिगरेट व बीड़ी, खैनी जैसे उत्पादों का भी प्रयोग जम कर करते हैं। उन्होंने कहा कि 40 हजार मरीजों में से 65 मरीज ऐसे पाए गए जिनके यकृत ने लगभग काम करना बंद कर दिया था। वे अन्तिम अवस्था में विभिन्न अस्पतालों से रेफर होकर यहां पहुंचे थे। उन्हें लिवर प्रत्यारोपण के लिए रेफर किया गया। उन्होंने कहा कि यकृत खराब होने की वजह अब तक हेपेटाइटिस बी और सी वायरस की सक्रियता के रूप में जानी जाती थी। लेकिन बीते कुछ समय से लोगों में जागरूकता आई है। जांच का दायरा और अच्छा हुआ है, जिससे पता चला है कि अब इस वायरस की चौथी वजह शराब व नशीले उत्पादों का प्रयोग करना अहम् कारणों में से एक है। समय पर के.एफ.टी. एल.एफ.टी. व अन्य जांचों से इस बीमारी की सक्रियता को कम किया जा सकता है। उन्होंने कहा कि 48 फीसद से भी अधिक लोगों में भारी मात्रा में शराब के सेवन की लत होती है। ऐसे लोगों के यकृत को बचा पाना काफी मुश्किल होता है। उन्होंने शराब की वजह से लोगों में यकृत संबंधी बीमारियों के बढ़ने पर चिंता जतायी।

अन्य कारण

हेपेटाइटिस कई प्रकार के होते हैं और इस बीमारी के कई कारण होते हैं। इसे ए, बी और सी के नाम से जाना जाता है। ये विषाणु यकृत की प्रक्रिया में फ्लू पैदा कर देते हैं, जिससे वह धीरे–धीरे सख्त होने के साथ ही काम करना बंद करने लगता है। संक्रमित व्यक्ति के मल में संपर्क होने पर हेपेटाइटिस 'ए' होता है। संक्रमित व्यक्ति के रक्त, द्रव्य, वीर्य या स्तन के दूध से संपर्क में आने से हेपेटाइटिस हो सकता है।

शराब हर परिवार तथा समाज को नष्ट करती है। इससे दूर रहें।

भय की दीवारें

– अलका आर्य

कुंभ का पहला बिंब मेरे दिमाग में तब बना था, जब छोटी थी और पिता, नानी और दादी के साथ वहाँ गई थी। हाल ही में एक बार फिर मैं कुंभ से लौटी। मेरे भीतर गंगा यमुना के गंदे पानी में डुबकी लगाकर, पांच सितारा सुविधाओं से सजे टेंट में रहने वाले महात्माओं के भ्रमजाल में फस कर जन्म–मरण के चक्कर से मुक्ति पाने की लालसा नहीं है। मैं वहाँ दुनिया के सबसे बड़े धार्मिक और सांस्कृतिक मेले को अपने नजरिए से देखने–समझने गई थी। कहीं सिर पर पुआर, रसोई का सामान और रसद उठाए महिलाओं के झुंड नजर आए तो कहीं महिलाओं की टोलियाँ गंगा किनारे संतों के प्रवचन सुनने के लिए जाती दिखाई पड़ी। चंद्रमा देवी से मैंने पूछा कि कुंभ में किसके साथ और क्यों आई, तो जवाब मिला – 'गाँव के लोग आ रहे थे, इसलिए मैंने भी सोचा कि पंडितों की कथा सुन आऊँ तो मुझे भी मोक्ष मिल जायेगा।' मैंने सवाल किया कि कथा तो तुम्हारे गाँव के मंदिर में भी होती होगी। फिर इतनी दूर तकलीफ सह कर क्यों आई?उसे यह सवाल अच्छा नहीं लगा और नाराजगी का इजहार उसकी भाव–भंगिमा से हुआ। बिहार के एक गाँव परसा से कुंभ में नहाने आई महिलाओं से भी ऐसे ही कुछ सवालों पर बातचीत हुई और उन्हें मेरी बातें जरा भी रास नहीं आई। वह कौन सा भय था जो उनके सोच के सामने दीवार की तरह खड़ा था। वहीं एक पुरुष बातचीत के दौरान बीच में कूद पड़ा और बताने लगा कि रामचरितमानस में लिखा है – 'अवगुण आठ नारी उर माही ....'यानी महिलाओं में आठ अवगुण होते हैं। वे अपवित्र होती हैं आदि।

वहाँ मौजूद महिलाएँ इसे सिर झुका कर चुपचाप सुनती रहीं। कुंभ में आई अधिकतर महिलाओं को पिछले साल 16 दिसम्बर को दिल्ली में सामूहिक बलात्कार के बारे में थोड़ी जानकारी थी, मगर न्यायमूर्ति जेएस वर्मा समिति, उसकी रिपोर्ट या अध्यादेश के बारे में कुछ नहीं पता था। मनरेगा, राशन में कितना गेहूँ –चावल मिलना चाहिए जैसी बातों के बारे में भी जरूरी जानकारियाँ नहीं थीं। जननी सुरक्षा योजना के तहत क्या–क्या मुफ्त सरकारी सेवाएँ मिलनी चाहिए और उन्हें कैसे हासिल किया जा सकता है, इस बारे में न तो मालूम था और न ही इसे जानने में किसी ने दिलचस्पी दिखाई। एक महिला का पति उसे मेरे सामने डांटने लगा तो मैंने उससे धीरे से पूछा कि क्या वह पिटाई भी करता है, तो महिला सिर झुका कर बोली – 'हाँ।' पास खड़ी उम्र में बड़ी वशीला देवी ने तुरन्त कहा – 'मालिक है, दूल्हा है, कमा के खिलाता है! मार दे तो कौन सी बड़ी बात हो गई!'

इसी कुंभ में पहली बार महामंडलेश्वर परिषद् का गठन किया गया है, जिसमें शीर्ष चारों पदों पर पुरुष हैं। जूना अखाड़े की संन्यासिन से जब मेरी बात हुई तो वह भी मुझे उस पुरुष प्रधान धार्मिक तंत्र की ही शिकार लगी जो महिलाओं को पुरुषों के अधीन मानता है। महिलाओं के पवित्रीकरण–शुद्धीकरण पर इस तंत्र का धंधा टिका हुआ है। धर्म की बुराइयों और अपने अधिकारों की माँग करने वाली महिलाएँ उनकी नजर में शत्रु हैं।

दरअसल, सदियों से आधिपत्य जमाने का अभ्यस्त धर्म भला समकक्ष और सहभागिनी होने के नारे पर कायम समाज को इतनी सहजता से कैसे स्वीकार कर लेगा। धर्म की दिलचस्पी शोषण का चक्रव्यूह तोड़ने में नहीं, बल्कि उसे और मजबूत बनाने में है। विरासत पुरुष को ही सौंपने में उसके निहित स्वार्थ हैं। इन विचारों का विस्तार अखाड़ों में भी देखने को मिल जाता है। अखाड़ों की राजनीति को भीतर से जानने वाले जानते हैं कि वहाँ गद्दी हासिल करने के लिए कोई भी रास्ता अपनाने में गुरेज नहीं किया जाता। एक संतप्त संन्यासिन ने बताया कि जब तक यौवन है, तब तक ठीक। उसके ढलते ही हाथ में झाड़ू पकड़ा दिया जाता है।

यों तो धर्मगत दोषों पर अंगुली उठाना ही अपने आपमें 'पाप' समझा जाता है और अगर कोई महिला ऐसा करने की जुर्रत करे तो उसे किस हद तक परेशान किया जाता होगा, इसकी कल्पना से मन कांपने लगता है। कुछ समय पहले मध्य प्रदेश सरकार में एक मंत्री कैलाश विजयवर्गीय ने कहा था – 'महिलाओं को मर्यादा में रहना चाहिए। अगर कोई महिला अपनी सीमाएँ लांघती है तो उसे दंड मिलना तय है।' कुंभ के जिस आयोजन के लिए सरकारी खजाने से करीब बारह सौ करोड़ की मोटी रकम निकाली गई, उसमें ऐसे ही धर्म को खाद–पानी से सींचा जा रहा है जो आने वाले वक्त में महिलाओं के प्रति और आक्रामक भूमिका निभायेगा। नैतिकता की दुहाई देकर उनके अधिकारों का सिर कलम करेगा। कुंभ में गंगा की दलदली जमीन पर मोक्ष की आस में बैठी आम औरत और टेंटों में रहने वाली संन्यासिनों के कानों तक पता नहीं 'वन बिलियन राइजिंग' का नारा 'बस, अब और नहीं' सुनाई पड़ा होगा या नहीं।

अभिव्यक्ति के खतरे

– कविता वाचक्नवी

हाल ही में 'पैन–अमेरिका' की ओर से जारी सूचना से पता चला कि सिंगापुर के कार्टूनिस्ट को एक कार्टून बनाने के दंडस्वरूप तीन वर्ष की जेल की सजा सुनाई जा सकती है। दूसरी ओर 'जनसत्ता' से पता चला कि 'पद्मश्री' मिलने के बाद बाईस अप्रैल को दिल्ली के एक मुशायरे में निदा फाजली ने जब एक शेर पढ़ा तो उनके विरुद्ध उग्र वातावरण बन गया। शेर यों है– 'उठ–उठ के मस्जिदों से नमाजी चले गए / दहशतगरों के हाथ में इस्लाम रह गया!'

यह खबर पढ़ कर समाज में बढ़ती असहिष्णुता के प्रति मन में रोष भर गया। कट्टर हिंदुत्व के विरुद्ध तो ज्यादातर आम लोग ही आवाज बुलंद करते रहते हैं। इसमें कोई साहस की बात नहीं। किसी भी समुदाय की कट्टरता के खिलाफ समान स्तर पर बोलने का साहस कभी कबीर ने किया था। फिर महर्षि दयानंद सरस्वती ने हिंदुत्व सहित लगभग सभी मतों की अवैज्ञानिक धारणाओं का कड़ा खंडन 'सत्यार्थ प्रकाश' में किया था। समाज जानता है कि न तो कबीर और न दयानंद अपने–अपने समय में इस प्रकार किसी विरोधी मत के हिंसक निशाने पर रहे। दयानंद की हत्या की योजनाएं जरूर बनाई गईं, लेकिन वे कुछ व्यक्ति–विशेष के कारण। पूरा समाज सांप्रदायिक उग्रता से हत्यारा हो उठा हो, ऐसा तब भी नहीं था। कबीर के समय जैसी सद्भावना हालांकि दयानंद के समय तक नहीं बची थी, फिर भी समाज आज की तुलना में अत्यधिक उदार था। लोग जानते थे कि दयानंद या कबीर निंदा के लिए ऐसा नहीं लिख या कह रहे थे, बल्कि वे एक सामाजिक, मानवीय या वैज्ञानिक कसौटी को आधार बना कर निष्पक्ष भाव से ऐसा कह रहे थे।

हालांकि किसी भी संप्रदाय, व्यक्ति, समाज, देश, वर्ग आदि की अवैज्ञानिकता या मानव विरोधी कार्यों का निष्पक्ष विरोध किया जाना अनुचित नहीं है। कबीर ने ऐसा किया। इसके बावजूद दोनों संप्रदायों ने उन्हें अपने वर्ग के बीच का साबित करना चाहा। लेकिन आज लगता है, ज्यों–ज्यों समय बीत रहा है, आधुनिक समाज और भी पिछड़ता जा रहा है और लोग हिंसा में सुख ढूंढ़ने लगे हैं। सच तो यह है कि स्वतंत्रता के समय तक अलग–अलग वर्ग इतने असहिष्णु नहीं थे। मुसलिम और हिंदू समाज परस्पर सहयोग और आत्मीयता के साथ रहते थे। आज दिखावे की दीवारें हट गई हैं, लेकिन दिलों में वैमनस्य भरा हुआ है। यहां तक कि विभाजन के समय भी खुद मेरा परिवार इस बात का साक्षी है कि बहुतेरे हिंदुओं ने मुसलमानों की रक्षा अपने प्राणों को दांव पर लगा कर की और इसी तरह बहुत सारे मुसलमानों ने भी हिंदुओं की रक्षा जी–जान से की। जब तक विभाजन का दौर नहीं शुरू हुआ था, तब तक मुसलिम और हिंदू परिवार परस्पर अत्यंत सौहार्द और भाईचारे के साथ रहते थे। हालांकि धार्मिक रीति–रिवाजों के कारण खानपान की शुचिता आदि का परस्पर भान था और उनका सम्मान किया जाता था। उन्हें धार्मिक नियम की तरह पूरे आदर से निभाया जाता था। पर दिलों में कतई दूरियां न थीं। खासतौर पर बाह्याचारों में नियमों का कड़ाई से पालन होता था। आज बाह्याचारों में कोई दूरियां नहीं रहीं, कोई भेद नहीं रहा, पालन की औपचारिक दीवार भी नहीं रह गई है। लगता है, सब दूरियां और बाधाएं समाप्त, लेकिन दिलों में अंतराल और दूरियों के समुद्र हहरा रहे हैं।

अनुदारता और हथियाए गए वर्चस्व के बूते लोग, सरकारें, वर्ग और समाज दूसरों का शोषण करने की मनोवृत्ति से ग्रसित हैं। भारत सरकार अपना बल आजमाती है, इंटरनेट से पन्ने हटवाती है, वेबसाइटें हैक करवाती है, अभिव्यक्ति की चीखों को गले में घोंट कर मार देने के लिए, क्योंकि वह अपने पक्ष में उठने वाले स्वरों का अस्तित्व मिटा देना चाहती है। सिंगापुर की सरकार भी एक कार्टूनिस्ट को तीन साल के लिए जेल में डालना चाहती है। विकीलीक्स और बेनामी ('हैक्टिविस्ट' समूह) जन्म लेते हैं, जिनकी आधिकारिक स्वीकार्यता न होने पर भी वे मानवविरोधी नहीं हैं और न ही उग्रता से इनका दमन किया जाता है।

उग्रता और आतंक से विरोधी स्वरों का गला घोंटने की यह सामाजिक या आधिकारिक प्रवृत्ति बहुत घातक है। यह इस बात का भी पता देती है कि हम एक आदिम समाज की ओर बढ़ रहे हैं। हम अधिक पिछड़ रहे हैं और संकुचित हो रहे हैं। शायद इसीलिए हमसे कई सौ वर्ष पुराना समाज भी समाज सुधारकों के प्रति वैसा तिक्त नहीं था। दूसरी ओर, आज हम रचनाकारों की अभिव्यक्ति के प्रति सरकारी या गैरसरकारी, सभी रूपों में अंकुश लगाने के लिए तत्पर हैं और अपनी तत्परता में कोई भी अपराध करने के लिए भी स्वतंत्र अनुभव करते हैं। अभिव्यक्ति के खतरे उठाने वालों के लिए क्या हमारे समाज में स्थान नहीं रहा?हम हैं क्या?

– जनसत्ता 10 मई, 2013 से साभार

गाय कैसे बचें?

– श्री मुलखराज जी विरमानी

भारत के कत्लखानों में और अवैध रूप से चोरी–छिपे गायों की निमर्म हत्याएँ हो रही हैं। हजारों गायें रोज तस्करी के माध्यम से बंगलादेश को जा रही हैं। ये गायें या तो रात के अंधेरे में सड़कों से उठा ली जाती हैं या किसानों से 200–400 रुपयों में खरीदी जाती हैं।

बंगलादेश में कत्लखानों में कसाई हर गाय या बैल के रक्त, मांस, हड्डियों, चमड़े से 25,000 से 30,000 रुपये तक कमाता है। किसान द्वारा 200–400 रुपयें में बेची हुई गाय बंगलादेश पहुँचकर तस्करों से 1500 से 2000 रुपयों में बिकने के पश्चात् कसाई को 25,000 से 30,000 रुपये देती है।

'गोमाता' कही जाने वाली इन गायों का वहाँ जिस क्रूरता से वध होता है, उसकी कल्पना भी बड़ी ही भयानक है। जीवित अवस्था में ही गोमाता को इतना पीटा जाता है कि पूरा शरीर सूज जाये, तत्पचात् उन पर खौलता हुआ गर्म जल डाला जाता है। फिर जिस तरह उबले हुए आलू से उसका छिलका उतारा जाता है, वैसे ही गोमाता के शरीर से उनका चमड़ा उतारा जाता है, अब तक भी गाय को मरने नहीं दिया जाता, जिससे कि उसका चमड़ा कड़ा न हो और मुलायम बना रहे।

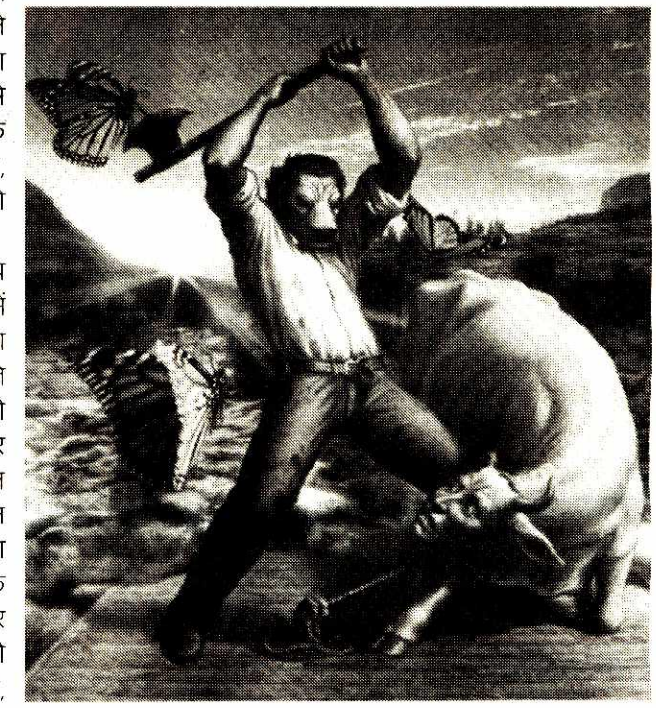

जिस गोमाता ने हमें अपना दूध पिलाया, जिसके बछड़ों ने हमारे खेतों में हल चलाकर हमारे लिए अन्न का उत्पादन किया, क्या उनके प्रति कृतज्ञता–ज्ञापन करने का हमारा यही तरीका होना चाहिए कि हम बूढ़ी होने पर उन्हें कुछ रुपयों के लिए बेच दें?आज हमें यह हल ढूँढ़ना ही पड़ेगा कि किसान बूढ़ी गाय को बोझ समझने के कारण 200–400 रुपये में नहीं बल्कि 2000–4000 रुपयें में भी न बेचें। गोबर और गोमूत्र कुछ स्थानों पर बहुत सारी वस्तुएँ बनाने के काम में लिया जा रहा है, जैसे कानपुर गोशाला सोसायटी, राजस्थान गो–सेवा संघ, जयपुर, इनके अतिरिक्त दो नये कारखाने मथुरा और आगरा के बीच लगे हैं, इनमें बोर्ड टाइल्स, फिनायल, दवाइयाँ, पंचगव्य इत्यादि बन रहे हैं।

गाय कैसे बचे?यह प्रश्न आज हर बुद्धिजीवी के समक्ष है। गोमाता के प्रति उपेक्षा भाव का ही दुष्परिणाम है कि स्थान–स्थान पर नकली घी, नकली दूध, नकली दही और अन्य नकली खाद्य पदार्थ बन एवं बिक रहे हैं, जिनसे व्यक्ति का स्वास्थ्य तो प्रभावित हो ही रहा है, साथ ही वह भयंकर बीमारियों से ग्रस्त होता जा रहा है। आज दुग्ध उत्पादन के लिये तो गोपालन, होना ही चाहिए, साथ ही बूढ़ी या बाँझ गाय, बैल और बछड़ों के गोबर और गोमूत्र से भिन्न–भिन्न प्रकार की खादें, फिनायल, खपरैल, टाइल्स, दवाइयों इत्यादि के निर्माण भी बड़ी मात्रा में होने चाहिए। उद्योगपतियों को चाहिए कि वे अनुसंधानकर गव्य पदार्थों से बनने वाली वस्तुएँ अधिक बनायें?उस स्थिति में बूढ़ी गाय या बैल किसान के लिए बोझ नहीं, बल्कि आर्थिक लाभदायक होकर उसके परिवार का भी पालन करेगी। कुछ धर्मभीरू किसान गाय को बेचने से डरते तो हैं परन्तु रुपयों के लोभ में वे रस्सी जमीन पर रख देते हैं, इसी प्रकार कसाई भी रुपयों को जमीन पर रख देता है। कसाई गाय को लेकर चला जाता है और किसान रुपये उठा लेता है, परन्तु यह प्रथा भी गो विक्रय अर्थात् महापाप ही है। कुछ किसान बूढ़े होने पर गाय–बैलों को रात में छोड़ देते हैं, जिससे वे कसाइयों के हाथ पड़ जाते हैं। यह भी अनुचित ही है। जिस प्रकार बूढ़े माता–पिता आदरणीय हैं, वैसे ही बूढ़े गो–बैल भी पालनीय हैं। उनका विक्रय या उनके पालन के प्रति उदासीनता महापाप ही है।

गोरक्षा का एक उपाय यह भी है कि गोचर भूमि और गोशालाओं का निर्माण प्रत्येक नगर एवं गाँवों में किया जाये, जहाँ दूध न देने वाली गायों को रखा जा सके और उनकी सेवा की व्यवस्था हो, यह अत्यन्त पुण्य का कार्य है।

– कल्याण से साभार

लिंगानुपात सैम्पल सर्वे ने चौंकाया

हजार लड़कों पर रह गईं सिर्फ 625 लड़कियाँ

लखनऊ : हजार लड़कों पर सिर्फ 625 बेटियाँ ..... भयानक है लेकिन यह आँकड़ा प्रदेश का ही हाल बता रहा है। एक वर्ष से कम उम्र के बच्चों के लिंगानुपात को लेकर यह तथ्य सामने आया है। लिंग आधारित भेदभावों पर काम कर रहे गैर–सरकारी संगठनों ने प्रदेश के आठ जिलों में सैंपल सर्वे किया। राष्ट्रीय ग्रामीण स्वास्थ्य मिशन, (एन आर एच एस), स्टेट इंस्टीट्यूट ऑफ हेल्थ एण्ड फैमिली वेलफेयर (एसआईएचएफडब्ल्यू), वात्सल्य और प्लान इण्डिया संस्थान द्वारा परिवार कल्याण संस्थान में प्री कंसेप्चुअल प्री नेटल डिटेक्शन टेक्नीक (पीसीपीएनडीटी) एक्ट पर आयोजित वर्कशॉप में यह सर्वे रिपोर्ट साझा की गई। सर्वे के मुताबिक ऐसे हालात की वजह लिंग चयन और कन्या भ्रूण हत्या है। खासतौर से दूसरे बच्चे के मामले में हो रही कन्या भ्रूण हत्याओं से हालात बिगड़े हैं। सर्वे के दौरान सबसे दुखद आंकड़ा एक वर्ष से कम उम्र के बच्चों में देखने को मिला।

वर्ष 2011–12 के दौरान यह सैंपल सर्वे प्रदेश के चार हिस्सों, उत्तर, दक्षिण, पूर्व, पश्चिम में बाँट कर किया गया। हर क्षेत्र के दो–दो जिलों मऊ, वाराणसी, अलीगढ़, बागपत, लखनऊ, प्रतापगढ़, जालौन और झांसी से 2,402 परिवारों को इसमें शामिल किया गया। इस दौरान इन परिवारों में बेटियों, उनकी स्थिति और उनके प्रति सोच को लेकर तमाम सवाल किए गए।

इसके अलावा यह रोचक तथ्य भी सामने आए कि लड़कों में शादी की औसत उम्र 19.7 वर्ष रही तो बेटियों में 17 वर्ष पाई गई। 26.4 प्रतिशत बच्चों के जन्म का ही रजिस्ट्रेशन होता है। 31 प्रतिशत बेटियाँ घर के काम खत्म होने के बाद ही खाना खाती हैं। 46.5 प्रतिशत परिवारों का मानना था कि बेटी की शादी जितनी जल्दी हो जाए, उतना अच्छा है। 87.3 प्रतिशत का मानना था कि परिवार में किसी की अंतिम क्रिया के लिए बेटा होना जरूरी है।

उत्तम मार्ग पर चलने का सरल उपाय

'सन्मार्ग दर्शन'

लेखक – स्वामी सर्वदानन्द

सन्मार्ग दर्शन में आठ गति है। 1. नाम गति, 2. अर्थगति, 3. शरीर गति, 4. जीवगति, 5. संसारगति, 6. सामान्य गति, 7. सरलगति, 8. मान्यमति गति इनके अवान्तर अनेक भेद हैं, उनका दर्शन सूची में करें। इस ग्रन्थ में ईश्वर, जीव, बन्ध, मोक्ष, सृष्टि–उत्पत्ति, प्रलय, व्यवहार सम्बन्धी विचार पाठकों को मिलेंगे। हितोपदेश पर अधिक बल दिया गया है। पृष्ठ–465 है। मूल्य 250 प्रति है। डाक व्यय फ्री होगा।

मधुर प्रकाशन, 2804, गली आर्य समाज, बाजार सीताराम, दिल्ली–6,

दूरभाष :–011–23238631, मधुर प्रकाश – मो.:–9810431857

कांग्रेसियो! सुनो, तुम्हारा संस्थापक क्या कह रहा है।

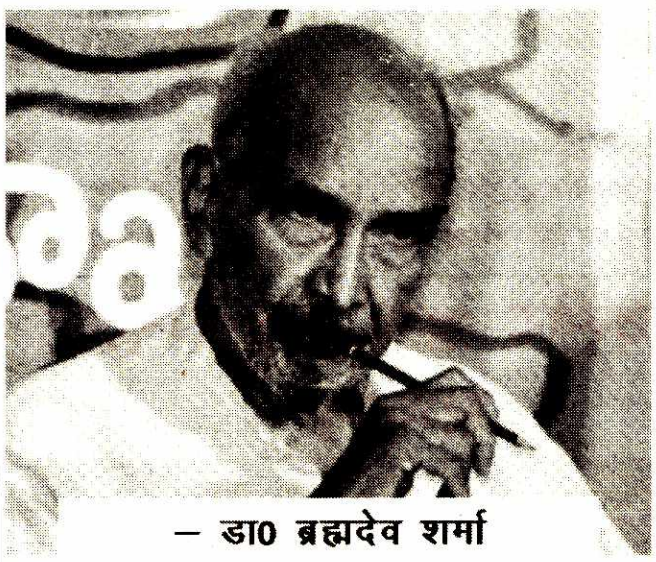

— डा0 ब्रह्मदेव शर्मा

एक संवेदनशील जिला मजिस्ट्रेट सरकार को अपनी रिपोर्ट भेज रहा था– अटपटी और बेमिसाल..... और यह रिपोर्ट लिखी गई थी आज से डेढ़ सौ साल पहले : 14 सितम्बर, 1860 के दिन। उसमें एक और बात भी थी

.....सरकारी हूकुम का अमल हुआ है। आबकारी आमदनी में इस साल 1858 रूपये का इजाफा हुआ है। खजाने में कुल 5251 रूपये जमा हुए हैं। मगर.....

" यह बंदोबस्त बेमिसाल यंत्रणा के बीच मुमकिन हुआ है। मैंने साल–दर–साल इसकी खिलाफत की है मगर उसका कोई असर नहीं हुआ। आज की इस अन्यायी व्यवस्था ने ऐसा वर्ग पैदा कर दिया है और उसे अब पाल रही है जिसका एक मात्र उद्देश्य है : अपने ही लोगों को शराबनोशी और उसकी अनिवार्य परिणति व्यभिचार और अपराध के दलदल में फँसाना!

"इस घोर अनाचार से राज को कोई माली नफा भी नहीं होता है। पुरानी कहावत है कि अनाचार का माल कभी फलता नहीं है। आमदनी एक रूपये की होती है परन्तु उसके चलते अपराध की बाढ़ को दबाने के लिये दो रूपये का कम से कम खर्च होता है। इस 'पाप की कमाई' की खातिर पिछले बीस साल में इस इलाके में कितनी शराब खोरी बढ़ी है उसका अहसास मुझ जैसे आदमी को ही हो सकता है जो प्रजाजन के बीच जाकर उनकी हालत जानने की जहमत उठाता हो।"

"इस घोर अनाचार से राज को कोई माली नफा भी नहीं होता है। पुरानी कहावत है कि अनाचार का माल कभी फलता नहीं है। आमदनी एक रूपये की होती है परन्तु उसके चलते अपराध की बाढ़ को दबाने के लिये दो रूपये का कम से कम खर्च होता है। इस 'पाप की कमाई' की खातिर पिछले बीस साल में इस इलाके में कितनी शराब खोरी बढ़ी है उसका अहसास मुझ जैसे आदमी को ही हो सकता है जो प्रजाजन के बीच जाकर उनकी हालत जानने की जहमत उठाता हो।"

और लोगों की खोज खबर रखने वाला वह संवेदनशील जिला मजिस्ट्रेट था एलेन आक्टोक्यिम ह्यूम (ए0 ओ0 ह्यूम) जिसने अन्य मुद्दों के साथ इस मुद्दे पर त्याग पत्र दिया था 135 साल पहले और कांग्रेस की स्थापना की थी 1885 में ।

अंग्रेजीराज के सौ साल के दौर में और उस राज के वारिसों के 65 साल के राज में राज के दामन पर लगा यह 'सबसे काला धब्बा' मिट नहीं पाया। राज के वारिसों (कांग्रेसियों) के लिये तो वह 'धब्बा' ही नहीं है। वह तो विकास का प्रतीक और क्रांति की वाहक शक्ति है। लोगों के बीच जाने की जहमत क्यों उठाओ?सब कुछ तो साफ है दूरदर्शन के जादुई पर्दे पर।

मगर जैसी इस दुनिया में सफाई है वैसी ही सफाई दूसरी ओर आम लोगों के बीच भी बन रही है। वारिसों ने शराब के अस्त्र बनाकर अवाम पर नया हमला बोला है। इसमें वे नव साम्राज्यवादी पूंजीवादी व्यवस्था के दलाल हैं। उनका मकसद है देश का सबकुछ हड़प लो, आम आदमी को खारिज कर दो, उसके हाथ में बोतल थमा दो जिससे अपनी खारिजी का गुनाह अपने ऊपर ले ले।

इस हमले में सबसे बुरी तरह घायल औरत ने इस मोर्चे को संभालने की कोशिश की थी। उसने बगावत जैसी कर दी थी। बगावत शुरू हुई थी तमिलनाडू में – एक साधारण महिला के संकल्प के साथ। वह छोटी सी चिन्गारी देखते–देखते फैल गई पूरे तमिलनाडू में। वहॉ से आंध्र प्रदेश और उत्तर प्रदेश और उत्तर में हरियाणा में भी इनकी सरकारें घुटने टेकनें के लिये मज़बूर हुई। परन्तु विद्रोह से उपजी सरकारी नशाबंदी धोखा साबित हुई।

राजनीतिक दलों ने राष्ट्रपिता को तो भुला ही दिया है। क्या वे उस पहले विद्रोही– कांग्रेस के पिता की बात पर कुछ गौर फरमायेंगे। हम लोग तो काले ठहरे, वह तो गोरा था..... और उस गोरे ने अपनी चिट्ठी में यह कहा था कि–

" मुझे डर है कि अब इस विषय पर कुछ भी कहना बेकार है। पिछले पांच साल से मैं हर साल वर्तमान व्यवस्था के खिलाफ, बिना किसी नतीजे के, कहता आया हूँ। इस समय भी मुझे सुधार की कोई आशा नहीं दिखाई दे रही है। तथापि मुझे इसमें कोई संदेह नहीं है कि यदि मुझे कुछ और समय बने रहने का मौका मिलता है तो एक गहरी मसीही–संवेदना वाली व्यवस्था में भारत सरकार (गवर्नमेंट ऑफ इंडिया) के ऊपर लगे सबसे बड़े धब्बें को अपने जीवन काल में मिटता देख पाऊँगा।"

क्या वह काला धब्बा आज इतना धवल हो गया है कि कांग्रेस की स्थापना के 138 वें साल के आयोजन में उसके संस्थापक की आखरी वसीयत, आखरी इच्छा कि उस काले धब्बे को जीवन काल में मिटता देख पाऊंगा की ओर कहीं से हल्की सी सरसराहटी भी नहीं। नई दिल्ली।

लेखक द्वारा लिखित छोटी सी पुस्तिका
"हमारे राज में दारू नहीं"
–महिला शक्ति से साभार

ईमेलः bharatjanandolan@gmail.com

विद्वेष की जड़ें

कायदे से एक सभ्य समाज का तकाजा है कि उसमें अगली पंक्ति में खड़े लोग अपने बीच के किन्हीं वजहों से पिछड़ गए लोगों को आगे लाने की पहल करें। मगर हमारे देश में आजादी हासिल होने के छह दशक से ज्यादा गुजर जाने के बावजूद हालत यह है कि वंचित समुदायों के लोग कई बार जब अपनी ओर से मुख्यधारा में शामिल होने की कोशिश करते हैं तो उन्हें कथित उच्च वर्गों की ओर से न सिर्फ अनेक तरह की बाधाओं का सामना करना पड़ता है, बल्कि कई बार यह विरोध हिंसक भी होता है। मध्यप्रदेश के नीमच जिले के गांव सेमली ईस्तमुरार के एक दलित परिवार की हसरत बस इतनी थी कि उनके घर से भी घोडे" पर बारात निकले। लेकिन गांव में दलित परिवार के दूल्हे का घोड़ी पर सवार होना ऊंची कही जाने वाली जाति के कुछ लोगों को नागवार गुजरा और उन्होंने दलितों को ऐसा नहीं करने की चेतावनी दी फिर जब पुलिस की मौजूदगी में बारात निकली तो पत्थरों से हमला कर दिया, जिसमें कई लोग घायल हो गए। यही नहीं, इसके बाद दबंगों ने दलित समुदाय के लोगों का हुक्का–पानी बंद कर दिया और अपनी दुकानों से राशन या दवाई आदि देना भी बंद कर दिया। एक लोकतांत्रिक व्यवस्था में यह समाज के सभी तबकों का स्वाभाविक हक होना चाहिए कि बिना किसी की भावनाओं को चोट पहुंचाए वह अपनी खुशी के इजहार के लिए स्वतंत्र हो। अगर विवाह के मौके पर कथित उच्च जाति से आने वाले दूल्हे के घोड़ी पर सवार होने से संबंधित परिवार या उनके संबंधियों की शान में इजाफा होता है तो यही अधिकार किसी दलित या निचली कही जाने वाली जाति के परिवार को कैसे नहीं है?बल्कि देश के तमाम नागरिकों को यह हक संविधान भी देता है। फिर क्या वजह है कि आज भी हमारे समाज का एक हिस्सा खुद को विशेषाधिकार प्राप्त वर्ग के रूप में देखता और कमजोर वर्गों को इससे वंचित रखने के लिए किसी भी हद तक चला जाता है।

मध्यप्रदेश में यह अकेली घटना नहीं है। देश के दूसरे इलाकों से भी ऐसी खबरें आती रहती हैं कि अगर किसी निचली कही जाने वाली जाति के लोगों ने खुशी जाहिर करने के लिए थोड़ी धूमधाम का सहारा लिया तो उन्हें सवर्ण तबकों की ओर से हिंसक विरोध का सामना करना पड़ा। हरियाणा में बेहद मामूली बात पर किसी दलित बस्ती पर हमला करने, आग लगाने, लूटपाट करने या हत्या तक कर देने की कई घटनाएं सामने आ चुकी हैं। किसी भी समर्थ सामाजिक वर्ग का कमजोर तबकों के साथ ऐसा बर्ताव वास्तव में सदियों पुरानी सामंती मानसिकता में कैद होने का सबूत है, जिसमें विद्वेष का आधार जातिगत ऊंच–नीच का भाव होता है। दरअसल, समय के साथ आर्थिक सशक्तीकरण के चलते दलितों–वंचितों की स्थिति में आ रहे सकारात्मक बदलाव को कुछ दबंग जातियों के लोग अपनी सामाजिक हैसियत कमजोर होने के रूप में देखते हैं। शायद यही वजह है कि दलित–वंचित जातियों के आगे आने का जहां स्वागत होना चाहिए, उसे रोकने के लिए कुछ लोग हिंसा तक का सहारा लेने से नहीं हिचकते। विडंबना है कि अर्थव्यवस्था के ऊंचे ग्राफ को प्रगति का एकमात्र पैमाना मानने वाली हमारी सरकारों के लिए सामाजिक विकास नीतियों पर विचार करना कभी जरूरी नहीं लगा। जब तक जातिगत या लैंगिक भेदभाव की समूची दृष्टि में बदलाव के मद्देनजर व्यापक अभियान नहीं चलाए जाते, तब तक सम्मान और समानता आधारित समाज का सपना अधूरा रहेगा।

— जनसत्ता से साभार

।।ओ३म्।।

सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् के तत्वावधान में
युवा चरित्र निर्माण, योग एवं शारीरिक प्रशिक्षण शिविर

दिनांक : 4 जून, 2013 से 10 जून, 2013 तक

स्थान : आदर्श वैदिक इण्टर कॉलेज, सिनौली, बागपत (उ. प्र.)

शिविर के आवश्यक नियम व निर्देश :–

1. शिविर में अनुशासन का पालन अति आवश्यक होगा।
(2) कोई भी कीमती सामान व मोबाईल साथ न लायें।
(3) वेशभूषा दो सेण्डों बनियान सफेद, दो निक्कर लाल।
(4) ऋतु अनुकूल बिस्तर (दरी, चादर, बैडसीट),
(5) खाने के बर्तन (थाली, कटोरी, गिलास, चम्मच)
(6) कापी, पेन, अवश्य साथ लायें।
(7) शिविर में भाग लेने के लिए 50 रुपये जमा करने होंगे।

अध्यक्षता : **स्वामी आर्यवेश जी,** प्रधान सार्वदेशिक आर्या युवक परिषद्, संयोजक, सार्वदेशिक सभा संचालन समिति
ध्वजारोहण : **श्री रघुवीर सिंह आर्य जी** (चेयरमैन राज इन्ड., शामली)
मुख्य अतिथि : **पं. माया प्रकाश त्यागी जी,** इनके अतिरिक्त अनेकों विद्वान तथा नेता पधार रहे हैं।

निवेदक
स्वामी धर्मवेश

शिविर आयोजक
श्री शिव कुमार आर्य शबगा
मो.:–9997763213

वैचारिक क्रान्ति के लिए सत्यार्थ प्रकाश पढ़ें।

NDPSo on 31 मई/1 जून, 2013 वैदिक सार्वदेशिक 30 मई से 5 जून, 2013
प्रकाशन की तिथि : 30 मई, 2013
पंजीयन संख्या DELMUL/2005/15488
डाक पंजीकरण संख्या DL(c)-01/1213/12-14
Licence to Post without prepayment of Postage. [U (c)-289/2012-14]

गुरूकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के नव नियुक्त कुलाधिपति डा0 राम प्रकाश को स्वामी अग्निवेश की बधाई

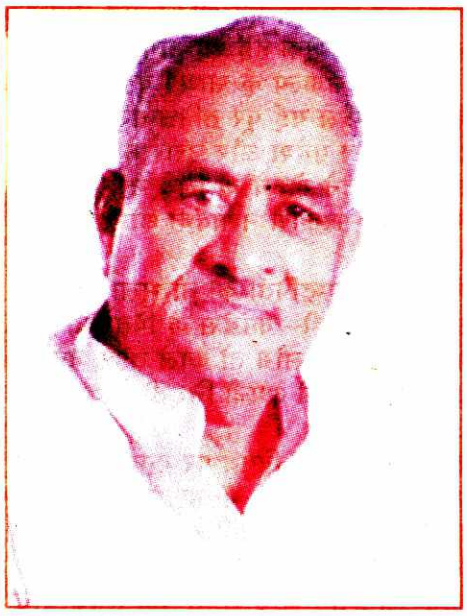

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के अन्तर्गत प्रक्रिया पूरी कर गुरूकुल कांगड़ी के कुलाधिपति (चांसलर) के पद पर आर्यजगत के प्रखर विद्वान तथा हरयाणा से राज्यसभा के सदस्य डा0 रामप्रकाश की नियुक्ति पर आर्य संन्यासी स्वामी अग्निवेश ने डा0 रामप्रकाश से उनके सांसद निवास पर मिलकर हार्दिक बधाई दी और गुरूकुल कांगड़ी के माध्यम से वैदिक वांगमय के अध्ययन अध्यापन को फिर एक बार बढ़ावा मिलेगा–ऐसी आशा व्यक्त की। स्वामी अग्निवेश ने बताया कि उज्जैन स्थित भारत सरकार द्वारा संचालित महर्षि संदीपनी राष्ट्रीय वेद विद्या प्रतिष्ठान के महत्वपूर्ण पद पर डा0 रूप किशोर शास्त्री (मेम्बर सेक्रेटरी) प्रतिष्ठित हैं। उधर महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय से आर्य विद्वान् आचार्य डा0 बलबीर जी अध्यक्ष दयानंद पीठ अब अवकाश प्राप्त हैं। हरिद्वार में ही संस्कृत विश्वविद्यालय के नये कुलपति डा0 महावीर अग्रवाल (पूर्व रजिस्ट्रार गुरूकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय) और इसी तरह सभी आर्य विद्वानों को एक बार फिर एकजुट कर, विगत् में आर्य मनीषियों द्वारा लिखित आर्य साहित्य का अंग्रेजी आदि में अनुवाद करा हम अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर वेदों को तथा महर्षि दयानंद के अप्रतिम योगदान को प्रतिष्ठित कर सकते हैं। स्वामी अग्निवेश ने कहा कि आर्य समाज के गुटवाद से ऊपर उठकर एक बड़े उद्देश्य के लिए हमें संगठित होकर काम करने की चुनौती स्वीकार करनी चाहिये।

डा0 रामप्रकाश ने भी इस आशा विश्वास के दौर को वापस लाने तथा डा0 तुलसीराम जैसे उद्भट आर्य विद्वानों की प्रतिभा का पूरा लाभ उठाते हुए, सार्वदेशिक आर्यप्रतिनिधि सभा – रामलीला मैदान के विशाल पुस्तकालय के अमूल्य ग्रन्थों का डिजिटाइजेशन आदि करवा इस अभियान को आगे ले जाने का भरोसा दिलाया।

आर्य जगत में वर्तमान वैदिक विद्वानों में श्री वेदप्रकाश श्रोत्रिय की प्रगाढ़ विद्वता और महर्षि के मिशन के प्रति उनकी अटूट आस्था हम सबके लिए गर्व का विषय है। डा0 सुरेन्द्र कादियान आर्य जगत के विशेष प्रतिमा संपन्न लेखक और संपादक हैं। दोनों आखों के मोतियाबिंद आपरेशन के बाद अब वे पूर्ण स्वस्थ हो गये हैं। ऐसे सभी विद्वर्य का ससम्मान योगदान प्राप्त करना हम सभी आर्यजनों के लिए संजीवनी समान हो सकती है। बृहत योजना बताकर अब शीघ्र कार्य में गतिशीलता लानी है।

– स्वामी अग्निवेश

बड़े गौर से सुन रहा था ज़माना, हम ही सो गये दास्तां कहते कहते?

पाठकों के पत्र तथा प्रतिक्रिया

श्री सम्पादक महोदय,

वैदिक सार्वदेशिक का नवीन अंक अभी–अभी प्राप्त हुआ। रंगीन वैदिक सार्वदेशिक देखकर मन प्रसन्न हुआ। इस अंक में लेखों का चयन भी अत्यन्त सुन्दर है। हिन्दी के ऊपर लेख जागरूक करने वाला है तथा श्री अशोक आर्य जी का लिखा लेख "अंध विश्वासों से दूर रहें" समाज में जागृति पैदा करने वाला है। सब मिलाकर यह पत्रिका अत्यन्त सुन्दर बन पड़ी है। ईश्वर से यही प्रार्थना है कि शिरोमणि सभा की यह पत्रिका उत्तरोत्तर प्रगति पथ पर अग्रसर रहे।

– रमेश चन्द्र श्रीवास्तव, परली बैजनाथ

महोदय,

वैदिक सार्वदेशिक पत्रिका का मैं बहुत पुराना ग्राहक हूँ। इस पत्रिका के पिछले कुछ अंक रंगीन छपे हैं और संकलित सामग्री भी बहुत उच्च स्तर की है। इस प्रकार के लेखों से ज्ञान तो बढ़ता ही है पाठक का नैतिक एवं चारित्रिक स्तर भी ऊँचा होता है। इसी प्रकार की विचारोत्तेजक सामग्री भविष्य में भी प्रकाशित होती रहेगी ऐसा मेरा विश्वास है।

– रघुनन्दन मिश्र, छपरा बिहार

श्रीयुत सम्पादक महोदय,

वैदिक सार्वदेशिक का 22 मई का अंक प्राप्त हुआ। सबसे पहले तो मैं आपको वैदिक सार्वदेशिक को आकर्षक रूप प्रदान करने के लिए बधाई देता हूँ। यह अंक वास्तव में सामग्री के लिहाज से तथा देखने में बहुत अच्छा लग रहा है। प्रथम पृष्ठ पर ही "मासूम की गुहार" आज के युग में हृदय को झकझोर देने वाली घटना है। स्वामी अग्निवेश जी तो वर्षों से इस प्रकार के सामाजिक कार्यों में लगे हुए हैं कन्या भ्रूण हत्या तथा बंधुआ मजदूरों की मुक्ति के लिए उन्होंने बहुत काम किया है। वर्तमान समय में शराब का बढ़ता प्रचलन बहुत ही चिन्ता का विषय है और स्वामी जी ने इस ज्वलन्त मुद्दे पर आन्दोलन का विचार बनाया है जो प्रशंसनीय है। हार्दिक शुभकामनाओं के साथ।

– आपका देवकीनन्दन, बलिया

प्रतिष्ठा में:–

अवितरण की दशा में लौटाएं–
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, 3/5 महर्षि दयानन्द भवन,
(रामलीला मैदान/आसफ अली रोड), नई दिल्ली-110002

त्रिदिवसीय आर्य महासम्मेलन सम्पन्न

श्री छोटे लाल मेमोरियल हाई स्कूल अटोर नंगला (गाजियाबाद) में आर्य उप–प्रतिनिधि सभा, गाजियाबाद–हापुड़ के तत्वावधान में आयोजित आर्य महासम्मेलन का विधिवत समापन आज राष्ट्र चेतना कवि सम्मेलन के साथ हो गया। इस कवि सम्मेलन में राष्ट्रीय स्तर के कवियों ने राष्ट्रीय बोध व समाज सुधार की भावनाओं से ओत–प्रोत गीतों का पाठ किया। डॉ. सारस्वत मोहन 'मनीषी' ने स्वराज्य मन्त्र के प्रथम उद्घोषक महर्षि दयानन्द को भावभरी श्रद्धांजलि देते हुए गीत पढ़ा – "जिनके पाँवों में न पायल थी न माथे पर बिन्दी, ऐसी अबलाओं की माँग भरवा दी तूने। एक जंगल में नई बस्ती बसा दी तूने।" राजेन्द्र राजा, डॉ. ईश्वर चन्द्र गम्भीर, वीरेन्द्र अबोध, जय नारायण 'अरूण' की कविताओं को श्रोताओं द्वारा सराहा गया। सम्मेलन का संयोजन विश्वबन्धु ने किया तथा जिला सभा के अध्यक्ष पं. माया प्रकाश त्यागी जी ने आगन्तुकों का धन्यवाद किया।

प्रतिदिन चार सत्रों में चलने वाले इस महासम्मेलन के आयोजन में योग साधना शिविर, राष्ट्र चेतना यज्ञ, वेद–सम्मेलन, युवा सम्मेलन, महिला सम्मेलन, समाज सुधार सम्मेलन, राष्ट्र रक्षा सम्मेलन के माध्यम से मार्ग प्रशस्त करने हारे विद्वानों के मुख्य नाम इस प्रकार हैं – सर्वश्री स्वामी आर्यवेश, स्वामी श्रद्धानन्द, स्वामी चन्द्रवेश, स्वामी सोम्यानन्द, सहदेव बेधड़क, संगीता आर्या, डॉ. पवित्रा विद्यालंकार, संजय शास्त्री, डॉ. अनिल आर्य, डॉ. कमलदीप शास्त्री, सोहित शास्त्री। कार्य के मुख्य संयोजक श्री कृष्णपाल आर्य ने सभी अतिथियों का स्वागत किया।

– पं. माया प्रकाश त्यागी

निःशुल्क चिकित्सा जाँच शिविर का आयोजन

आर्य समाज बीकानेर गंगायचा अहीर, जिला–रेवाड़ी (हरियाणा) द्वारा विगत् 28 अप्रैल, 2013 को अपने प्रांगण में एक निःशुल्क चिकित्सा जाँच शिविर का आयोजन डॉ. महेन्द्र कुमार के संरक्षण में हुआ। प्रातः 10 बजे से दोपहर बाद 2 बजे तक लगभग 250 मरीजों के स्वास्थ्य की निःशुल्क जाँच की गई। इसके अतिरिक्त हृदय की नसों में रूकावट, शुगर, पीलिया, रक्तचाप, सीने में दर्द व टाईफाईड आदि रोगों से ग्रस्त रोगियों को भी मुफ्त परामर्श व दवाईयाँ वितरित की गई। शिविर में कत्याल अस्पताल एवं क्रिटीकल केयर सेन्टर रेवाड़ी के तत्वावधान में डॉ. पुनीत कत्याल व अन्य विशेषज्ञ चिकित्सकों का पूर्ण योगदान रहा।

इससे पहले 20 फरवरी, 2013 को आर्य समाज ने नाक, कान व गला आदि रोगों से पीड़ित रोगियों के परीक्षण व इलाज हेतु एस. जी. टी. मेडिकल कॉलेज अस्पताल, बुढ़ेड़ा (गुड़गांव) के विशेषज्ञ डॉक्टरों द्वारा शिविर लगाया था।

– धर्मवीर आर्य, मंत्री

प्रो० विदुलराव आर्य, सभा मंत्री, प्रकाशक व मुद्रक द्वारा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, 3/5 महर्षि दयानन्द भवन, (रामलीला मैदान/आसफ अली रोड), नई दिल्ली-110002 के लिए प्रकाशित तथा ज्योति प्रिंटिंग प्रेस, ई-94, सैक्टर-6, नोएडा-201301 से प्रकाशित एवं मुद्रित। (फोन : 011-23274771, 23260985 टेलीफैक्स : 23274216)
सम्पादक : प्रो० विदुलराव आर्य (सभा मन्त्री) मो.:0-9849560691, 0-9013251500 ई-मेल : Sarvadeshik@yahoo.co.in वैबसाइट : www.vedicaryasamaj.com

वैदिक सार्वदेशिक साप्ताहिक में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक या सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सैद्धान्तिक मतैक्यता होना अनिवार्य नहीं है।